सिविल सेवा परीक्षा...

संस्कृति IAS

सामान्य अध्ययन

मध्यकालीन भारत का इतिहास

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम

636, भू-तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

9555-124-124 sanskritiiasedu@gmail.com

प्रिय विद्यार्थी,

सबसे पहले संस्कृति IAS के 'दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम' का हिस्सा बनने पर आपको बहुत बधाई।

सिविल सेवा परीक्षा, जिसे आई.ए.एस. परीक्षा के नाम से जाना जाता है; यह देश की प्रतिष्ठित लोक सेवाओं में चयन के लिये आयोजित होने वाली सर्वाधिक लोकप्रिय प्रतियोगी परीक्षा है। आज देश में युवाओं की एक बड़ी संख्या है जो सिविल सेवाओं में जाकर राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान देना चाहते हैं। परंतु, गंभीरतापूर्वक इस परीक्षा की तैयारी करना हर किसी के लिये संभव नहीं हो पाता। इसकी एक बड़ी वजह यह है कि इस परीक्षा की तैयारी के लिये दिल्ली, प्रयागराज या लखनऊ जैसे शहरों में रहना किसी भी निम्न-मध्यम वर्गीय पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थी के लिये संभवप्राय नहीं होता; दूसरा, एक बड़ी संख्या ऐसे विद्यार्थियों की भी है जो पहले से नौकरी कर रहे हैं। इन विद्यार्थियों के लिये मुख्य समस्या समय की होती है क्योंकि कोचिंग संस्थान में जाकर तैयारी करने में डेढ़-दो वर्ष का समय लगता है, जबकि नौकरी से इतनी लंबी छुट्टी मिलनी प्राय संभव नहीं होती।

ऐसे ही विद्यार्थियों को ध्यान में रखते हुए संस्कृति IAS ने 'दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम' की शुरुआत की है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत, कम फीस में विद्यार्थियों को किसी भी कोर्स की पूरी पाठ्य सामग्री उनके घर पर भेजी जाती है। यह पाठ्य सामग्री सिविल सेवा परीक्षा के पाठ्यक्रम के अनुरूप होती है। अगर कोई विद्यार्थी गंभीरता से इस पाठ्य सामग्री का अध्ययन करता है तो उसकी इतनी तैयारी निश्चित रूप से हो जाएगी कि वह सिविल सेवा परीक्षा को पास कर सके।

हालाँकि, किसी भी विद्यार्थी के दिमाग में यह संशय उत्पन्न होना स्वभाविक है कि अगर इस पाठ्य सामग्री को पढ़कर यह परीक्षा पास हो सकती है तो फिर कोचिंग संस्थान में पढ़ाई करने की क्या आवश्यकता है? अतः यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि इस कार्यक्रम के अंतर्गत आपको सिर्फ संपूर्ण पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी। क्लासरूम प्रोग्राम में पाठ्य सामग्री के अतिरिक्त विद्यार्थी की तैयारी को प्रभावी बनाने के लिये कई तरह के कार्यक्रम चलाए जाते हैं, जैसे नियमित कक्षा, क्लास टेस्ट, टेस्ट सीरीज़, शंका निवारण सत्र, नियमित रूप से अध्यापक से मिलकर तैयारी को बेहतर बनाने की सुविधा इत्यादि।

अतः 'दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम' को क्लासरूम प्रोग्राम का विकल्प नहीं कहा जा सकता है। यद्यपि, ऐसे विद्यार्थी जो किसी कारणवश दिल्ली या प्रयागराज जैसे शहरों में जाकर सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी नहीं कर सकते हैं, ऐसे विद्यार्थियों के लिये 'दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम' अपनी प्रकृति में निश्चित रूप से एक श्रेष्ठ विकल्प है।

विधिक घोषणाएँ

- इस पुस्तक में प्रकाशित सूचनाएँ, समाचार, ज्ञान एवं तथ्य पूरी तरह से सत्यापित किये गए हैं। फिर भी, यदि कोई जानकारी या तथ्य गलत प्रकाशित हो गया हो तो प्रकाशक, संपादक या मुद्रक, उससे किसी व्यक्ति विशेष या संस्था को पहुँची क्षति के लिये ज़िम्मेदार नहीं है।
- हम विश्वास करते हैं कि इस पुस्तक में छपी सामग्री लेखकों द्वारा मौलिक रूप से लिखी गई है। अगर कॉपीराइट उल्लंघन का कोई मामला सामने आता है तो प्रकाशक को ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा।
- सभी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायिक क्षेत्र में होगा।
- © कॉपीराइट: संस्कृति पब्लिकेशन्स, सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रकाशन अथवा उपयोग, प्रतिलिपीकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानांतरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार से) प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

विषय-सूची

इकाई	टॉपिक	पेज संख्या
1	पूर्व मध्यकाल	1-24
2	दिल्ली सल्तनत की स्थापना के पूर्व की राजनीतिक स्थिति	25-29
3	दिल्ली सल्तनत	30-41
4	खिलजी वंश	42-56
5	तुगलक वंश	57-70
6	सैय्यद और लोदी वंश	71-76
7	दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था	77-99
8	क्षेत्रीय राज्यों का उदय	100-108
9	विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य	109-130
10	भक्ति और सूफी आंदोलन	131-154
11	मुगल साम्राज्य	155-208
12	मुगल प्रशासन	209-228
13	मराठा साम्राज्य	229-238
14	विविध पहलू	239-244

विस्तृत अनुक्रम

इकाई	टॉपिक	पेज संख्या
1	**पूर्व मध्यकाल**	**1-24**
	• परिचय • राजनीतिक स्थिति ➤ राजपूतों की उत्पत्ति ■ विदेशी उत्पत्ति का सिद्धांत ■ भारतीय उत्पत्ति का सिद्धांत ➤ गुर्जर-प्रतिहार वंश ➤ गहड़वाल वंश ➤ चाहमान/चौहान वंश ➤ परमार वंश ➤ चंदेल वंश ➤ कलचुरी-चेदि वंश ➤ सोलंकी/चौलुक्य वंश • प्रशासनिक स्थिति • सामाजिक स्थिति • धार्मिक स्थिति • आर्थिक स्थिति ➤ कृषि ➤ उद्योग-धंधे ➤ व्यापार-वाणिज्य • कला एवं संस्कृति • पाल वंश ➤ जानकारी के स्रोत ➤ राजनीतिक स्थिति ➤ कला एवं संस्कृति • कन्नौज के लिये त्रिपक्षीय संघर्ष	
2	**दिल्ली सल्तनत की स्थापना के पूर्व की राजनीतिक स्थिति**	**25-29**
	दिल्ली सल्तनत की स्थापना के पूर्व की राजनीतिक स्थिति • इस्लाम का उदय • अरबों की सिंध विजय ➤ अरब आक्रमण का महत्त्व • भारत पर अरबों के आक्रमण का ऐतिहासिक महत्त्व • तुर्क आक्रमण ➤ महमूद गजनवी का आक्रमण ➤ मुहम्मद गोरी का आक्रमण	
3	**दिल्ली सल्तनत**	**30-41**
	दिल्ली सल्तनत • प्रमुख स्रोत • मामलूक वंश (गुलाम वंश) • प्रमुख शासक ➤ कुतुबुद्दीन ऐबक ➤ इल्तुतमिश ➤ बलबन ➤ बलबन के प्रशासनिक सुधार ➤ मूल्यांकन	
4	**खिलजी वंश**	**42-56**
	• महत्त्वपूर्ण स्रोत • उदय • प्रमुख शासक ➤ जलालुद्दीन खिलजी ➤ अलाउद्दीन खिलजी ➤ अलाउद्दीन खिलजी का राजत्व सिद्धांत ➤ अलाउद्दीन की साम्राज्य विस्तार नीति ➤ अलाउद्दीन खिलजी की प्रशासनिक नीति ➤ अलाउद्दीन खिलजी की आर्थिक नीति ➤ आर्थिक नीति के परिणाम ➤ अलाउद्दीन का मूल्यांकन ➤ कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी ➤ खिलजी वंश के पतन के कारण	

इकाई	टॉपिक	पेज संख्या
5	**तुगलक वंश**	**57-70**
	• जानकारी के स्रोत • पृष्ठभूमि • गयासुद्दीन तुगलक (1320-25 ई.) ➤ परिचय ➤ चुनौतियाँ ➤ सैन्य अभियान ➤ प्रशासनिक एवं आर्थिक सुधार • मुहम्मद बिन तुगलक (1325-51 ई.) ➤ परिचय ➤ विदेश नीति ➤ राजत्व सिद्धांत ➤ गृह नीति ➤ सैन्य अभियान ➤ प्रयोग एवं सुधार ➤ राजधानी परिवर्तन ➤ सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन ➤ कृषि सुधार एवं दोआब में कर वृद्धि ➤ मुहम्मद बिन तुगलक के विरुद्ध विद्रोह • फिरोज़शाह तुगलक (1351-88 ई.) ➤ सैन्य अभियान ➤ प्रशासनिक सुधार	
6	**सैय्यद और लोदी वंश**	**71-76**
	सैय्यद वंश • परिचय • प्रमुख शासक ➤ खिज्र खाँ ➤ मुबारकशाह ➤ मुहम्मदशाह ➤ अलाउद्दीन आलमशाह **लोदी वंश** • महत्त्वपूर्ण स्रोत • प्रमुख शासक ➤ बहलोल लोदी ➤ सिकंदर लोदी ➤ इब्राहिम लोदी	
7	**दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था**	**77-99**
	दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था • परिचय • केंद्रीय प्रशासन ➤ प्रांतीय प्रशासन ➤ स्थानीय प्रशासन • इक्ता व्यवस्था • आर्थिक स्थिति • सल्तनतकालीन सामाजिक जीवन • सल्तनतकालीन स्थापत्य कला • सल्तनतकालीन साहित्य	
8	**क्षेत्रीय राज्यों का उदय**	**100-108**
	• परिचय ➤ बंगाल ➤ असम ➤ उड़ीसा ➤ कश्मीर ➤ मालवा ➤ जौनपुर ➤ गुजरात ➤ मेवाड़	

इकाई	टॉपिक	पेज संख्या
11	**मुगल साम्राज्य**	**155-208**
	• महत्त्वपूर्ण स्रोत • प्रमुख शासक ➤ बाबर ➤ हुमायूँ ➤ हुमायूँ का निर्वासन ➤ हुमायूँ द्वारा सत्ता की पुनः प्राप्ति • शेरशाह सूरी ➤ परिचय ➤ आरंभिक जीवन ➤ हुमायूँ से संघर्ष ➤ शासक के रूप में • शेरशाह के उत्तराधिकारी और सूर वंश का पतन • शेरशाह सूरी की प्रशासनिक व्यवस्था ➤ राजत्व सिद्धांत ➤ केंद्रीय प्रशासन ➤ प्रशासनिक विभॉजन • राजस्व व्यवस्था ➤ भू-राजस्व व्यवस्था ➤ मुद्रा व्यवस्था ➤ व्यापार • कल्याणकारी कार्य ➤ सड़कों और सरायों का निर्माण ➤ दान व्यवस्था • शिक्षा एवं साहित्य • स्थापत्य कला **अकबर** • परिचय • प्रमुख चुनौतियाँ ➤ पानीपत का द्वितीय युद्ध (1556 ई.) ➤ बैरम खाँ का संरक्षण/पतन ➤ मुगल साम्राज्य का विस्तार ➤ अकबर की प्रशासनिक संरचना ➤ अर्थव्यवस्था ➤ साहित्य एवं कला **जहाँगीर** • परिचय • खुसरो का विद्रोह (1606 ई.) • जहाँगीर के सैन्य अभियान • कंधार की पराजय (1622 ई.) ➤ नूरजहाँ का उत्कर्ष और शासन पर उसका प्रभाव ➤ खुर्रम का विद्रोह ➤ महावत खाँ का विद्रोह • जहाँगीर के शासनकाल में यूरोपीय आगमन ➤ चित्रकला ➤ विविध **शाहजहाँ** • परिचय • प्रथम विद्रोह • प्रमुख सैन्य अभियान • शाहजहाँ की दक्षिण नीति • शाहजहाँ की राजपूत नीति • शाहजहाँ की धार्मिक नीति • उत्तराधिकार का संघर्ष • शाहजहाँकालीन प्रशासन **औरंगज़ेब** • परिचय • राज्याभिषेक • साम्राज्य विस्तार • प्रमुख विद्रोह • धार्मिक नीति	

इकाई	टॉपिक	पेज संख्या
12	**मुगल प्रशासन**	**209-228**
	• परिचय ➤ राजत्व सिद्धांत • केंद्रीय प्रशासन ➤ मंत्रिपरिषद् ➤ प्रांतीय प्रशासन ➤ मनसबदारी पद्धति ➤ भू-राजस्व व्यवस्था ➤ साहित्य एवं कला ➤ चित्रकला ➤ संगीत ➤ उद्यान	
13	**मराठा साम्राज्य**	**229-238**
	मराठा साम्राज्य • पृष्ठभूमि • प्रमुख स्रोत • मराठा साम्राज्य के उदय के कारण **छत्रपति शिवाजी (1627-1680 ई.)** • परिचय • शिवाजी का विजय अभियान • शिवाजी का राज्याभिषेक (1674 ई.) • मराठा प्रशासन • मराठा साम्राज्य के उत्तराधिकारी	
14	**विविध पहलू**	**239-244**
	उत्तरवर्ती मुगल शासक • परिचय • बहादुरशाह/शाहआलम प्रथम (1707-12 ई.) • जहाँदारशाह (1712-13 ई.) • फर्रुखशियर (1713-19 ई.) • रफी-उद्-दरजात (24 फरवरी – 4 जून 1719) • रफी-उद्-दौला या शाहजहाँ द्वितीय (6 जून – 17 सितंबर 1719 ई.) • मुहम्मदशाह/रौशन अख्तर (1719–48 ई.) • अहमदशाह (1748–54 ई.) • आलमगीर द्वितीय (1754–58 ई.) • शाहजहाँ तृतीय (1758–59 ई.) • शाहआलम द्वितीय (1759–1806 ई.) • अकबर द्वितीय (1806–37 ई.) • बहादुरशाह द्वितीय/ज़फर (1837–57 ई.) **सिख गुरुओं से संबंधित मुख्य बिंदु** • सिख गुरुओं संक्षिप्त परिचय	

❑❑❑❑❑

इकाई 1

पूर्व-मध्य काल
(Early Medieval Period)

- परिचय
- राजनीतिक स्थिति
  - ➤ राजपूतों की उत्पत्ति
    - ■ विदेशी उत्पत्ति का सिद्धांत
    - ■ भारतीय उत्पत्ति का सिद्धांत
  - ➤ गुर्जर-प्रतिहार वंश
  - ➤ गहड़वाल वंश
  - ➤ चाहमान/चौहान वंश
  - ➤ परमार वंश
  - ➤ चंदेल वंश
  - ➤ कलचुरी-चेदि वंश
  - ➤ सोलंकी/चौलुक्य वंश
- प्रशासनिक स्थिति
- सामाजिक स्थिति
- धार्मिक स्थिति
- आर्थिक स्थिति
  - ➤ कृषि
  - ➤ उद्योग-धंधे
  - ➤ व्यापार-वाणिज्य
- कला एवं संस्कृति
- पाल वंश
  - ➤ जानकारी के स्रोत
  - ➤ राजनीतिक स्थिति
  - ➤ कला एवं संस्कृति
- कन्नौज के लिये त्रिपक्षीय संघर्ष

संस्कृति IAS

परिचय (Introduction)

- हर्ष की मृत्यु के पश्चात् उत्तर भारत में राजनीतिक स्थितियाँ बदलने लगीं। इस दौरान उत्तर भारत को राजपूतों ने राजनीतिक नेतृत्व प्रदान किया। इस कारण कुछ विद्वान पूर्व-मध्य काल को 'राजपूत काल' की संज्ञा भी देते हैं। राजपूत शक्तियाँ मूलतः वर्तमान राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात आदि क्षेत्रों में केंद्रित थीं। उत्तर भारत के अलावा, पूर्वी भारत व दक्षिण भारत में भी विभिन्न राजनीतिक शक्तियाँ अस्तित्व बनाए हुए थीं, जैसे- बंगाल में पाल वंश, दक्षिण भारत में राष्ट्रकूट वंश, चोल वंश आदि।
- इसी काल में गुर्जर-प्रतिहार नामक राजपूत वंश, बंगाल के पाल वंश तथा दक्षिण भारत के राष्ट्रकूटों के बीच कन्नौज पर आधिपत्य स्थापित करने को लेकर एक लंबा संघर्ष चला। यह संघर्ष इतिहास में 'त्रिपक्षीय संघर्ष' के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अलावा, पूर्व-मध्य काल के दौरान ही भारत पर मुस्लिम आक्रमण भी आरंभ हो गए थे और उन्होंने सिंध प्रदेश को विजित कर लिया था। उत्तर भारत में इस प्रकार की स्थितियाँ तब तक व्याप्त रहीं जब तक कि 1206 ई. में दिल्ली सल्तनत की स्थापना नहीं हो गई। इस अध्याय में हम इन तमाम घटनाक्रमों का क्रमवार अध्ययन करेंगे।

राजनीतिक स्थिति (Political Condition)

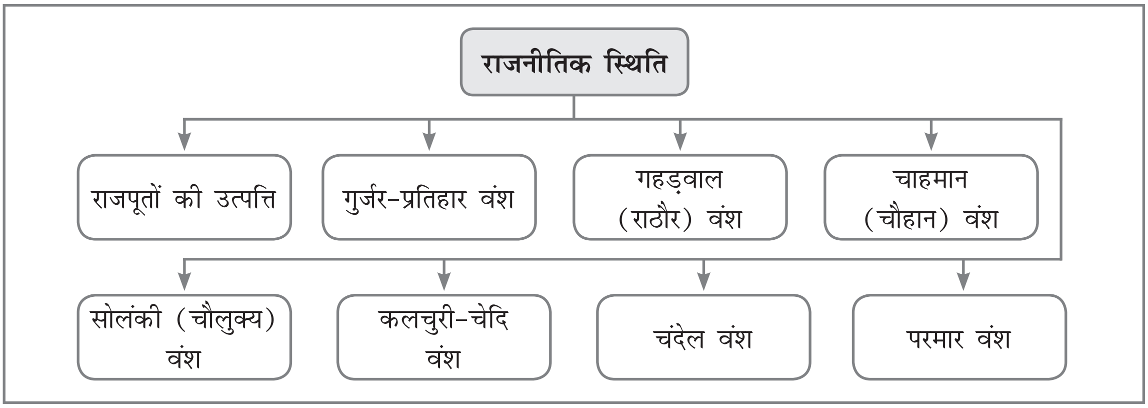

राजपूतों की उत्पत्ति (Origin of Rajputs)

- भारतीय इतिहास में राजपूतों की उत्पत्ति एक महत्त्वपूर्ण किंतु विवादित विषय रहा है। 'राजपूत' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम सातवीं–आठवीं सदी में किया गया था। ये मुख्यतः शासक/सैनिक वर्ग से संबंधित थे। दसवीं से बारहवीं सदी तक इन्होंने उत्तर, पश्चिम एवं मध्य भारत के विस्तृत भू-भाग पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया।
- कुछ विद्वानों ने राजपूतों का संबंध गुप्तोत्तरकालीन विदेशी आक्रांताओं से स्थापित किया, जबकि कुछ ने इन्हें क्षत्रिय कुल से उत्पन्न माना है। गोत्र की संकल्पना के आधार पर इन्हें चंद्रमा से संबंधित क्षत्रिय (सोमवंशी) तथा महाकाव्यों के आधार पर इन्हें सूर्यवंशी क्षत्रिय कहा गया है। सूर्य से इनकी उत्पत्ति का आशय है कि कलयुग में इनकी उत्पत्ति विदेशियों के सर्वनाश के लिये हुई है।
- राजपूतों की उत्पत्ति के संदर्भ में अनेक साहित्यिक स्रोतों, जैसे– हम्मीरमहाकाव्य, नवसाहसांकचरित, वर्णरत्नाकर, कुमारपालचरित, पृथ्वीराज रासो इत्यादि से जानकारी प्राप्त होती है।
- राजपूतों की उत्पत्ति के संबंध में दो सिद्धांत प्रस्तुत किये जाते हैं–
  (1) विदेशी उत्पत्ति का सिद्धांत (Theory of Foreign origin)
  (2) भारतीय उत्पत्ति का सिद्धांत (Theory of Indian origin)

1. विदेशी उत्पत्ति का सिद्धांत (Theory of Foreign origin)

- कर्नल जेम्स टॉड, विलियम क्रुक, वी.ए. स्मिथ, ईश्वरी प्रसाद, डी.आर. भंडारकर आदि विद्वानों ने राजपूतों को विदेशी मूल का माना है।
- कर्नल टॉड ने राजपूतों को शक, कुषाण तथा हूणों की संतान माना है। इन्होंने राजपूतों एवं इन विदेशी जातियों की सामाजिक एवं धार्मिक प्रथाओं, जैसे– मांसाहार का प्रचलन, युद्ध में रथों का प्रयोग, अश्वमेध यज्ञ, वेश-भूषा, नारियों की स्थिति इत्यादि में समानता को इसका आधार बनाया है। ये प्रथाएँ राजपूतों एवं विदेशी आक्रांताओं दोनों में समान रूप से पाई जाती हैं।
- विलियम क्रुक के अनुसार, ब्राह्मणों ने नास्तिक संप्रदायों (बौद्ध आदि) से द्वेष के कारण तत्कालीन समाज में रहने वाली विदेशी जातियों का शुद्धिकरण कर उन्हें हिंदू समाज में समाहित कर लिया। आगे चलकर उन्हें ही राजपूत कहा जाने लगा।

इकाई 2

दिल्ली सल्तनत की स्थापना के पूर्व की राजनीतिक स्थिति

(Political Situation before the Establishment of Delhi Sultanate)

दिल्ली सल्तनत की स्थापना के पूर्व की राजनीतिक स्थिति

- इस्लाम का उदय
- अरबों की सिंध विजय
  - अरब आक्रमण का महत्त्व
- भारत पर अरबों के आक्रमण का ऐतिहासिक महत्त्व
- तुर्क आक्रमण
  - महमूद गज़नवी का आक्रमण
  - मुहम्मद गोरी का आक्रमण

इस्लाम का उदय

- 570 ई. में मक्का में इस्लाम धर्म के संस्थापक और पैगंबर 'मुहम्मद साहब' का जन्म हुआ। इनके माता (अमीना) और पिता (अब्दुल्ला) की बचपन में ही मृत्यु हो जाने के कारण इनका पालन-पोषण चाचा अबु तालिब ने किया।
- चालीस वर्ष की उम्र में 'हीरा' नामक पहाड़ी पर इन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई। उनकी पहली शिष्या उनकी पत्नी खदीजा थी। कबीलों से मतभेद के कारण ये मदीना चले गए और यहीं से 622 ई. हिजरी संवत् का आरंभ हुआ। इन्होंने अरब में इस्लाम का प्रचार-प्रसार किया तथा संपूर्ण अरब को एक राजनीतिक सूत्र में बाँधा।
- कालांतर में अनेक खलीफा हुए, जिन्होंने इस्लाम का प्रचार-प्रसार अरब के बाहर भी किया। धीरे-धीरे खलीफा राजनीतिक स्वरूप धारण करते गए।
- खलीफा और उनके समर्थकों की धर्म और साम्राज्य विस्तार की नीति ने उनके राज्य की सीमा का विस्तार अटलांटिक से कैस्पियन सागर तक कर दिया। इसी क्रम में अरबों ने भारत पर भी आक्रमण किया।

अरबों की सिंध विजय (Sindh Conquest of the Arabs)

- अरबों के आक्रमण के समय संपूर्ण उत्तर भारत राजनीतिक रूप से खंडित था, अनेक छोटे-छोटे राज्य उत्तर भारत के राजनीतिक पटल पर अवस्थित थे। कन्नौज में प्रतिहार, कश्मीर में चंद्रपीड और बंगाल में पाल वंश का शासन था। कोई भी शासक राजनीतिक रूप से इतना शक्तिशाली नहीं था कि वह संपूर्ण उत्तर भारत को एक राजनीतिक सूत्र में बाँध सके।
- 711-12 ई. में मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में अरबों ने सिंध पर आक्रमण किया। यह भारत पर पहला मुस्लिम आक्रमण था। इसमें सिंध का शासक दाहिर पराजित हुआ और नगरों में कत्लेआम किया गया तथा लूटे गए धन को खलीफा के पूर्वी प्रांत के सूबेदार हज्जाज के पास भेज दिया गया।

इकाई 3

दिल्ली सल्तनत
(Delhi Sultanate)

दिल्ली सल्तनत

- प्रमुख स्रोत
- मामलूक वंश (गुलाम वंश)
- प्रमुख शासक
  - ➤ कुतुबुद्दीन ऐबक
  - ➤ इल्तुतमिश
  - ➤ बलबन
  - ➤ बलबन के प्रशासनिक सुधार
  - ➤ मूल्यांकन

प्रमुख स्रोत

तुर्क आक्रमणकारी मुहम्मद गोरी ने भारत के विभिन्न राज्यों को विजित किया। 1206 ई. में गोरी की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारियों ने जिस तुर्क साम्राज्य की स्थापना की, उसे 'दिल्ली सल्तनत' के नाम से जाना जाता है। दिल्ली सल्तनत में पाँच वंशों (गुलाम, खिलजी, तुगलक, सैय्यद और लोदी) का शासन रहा। दिल्ली सल्तनत के अध्ययन के लिये तीन प्रमुख स्रोत हैं–

- पुरातात्त्विक स्रोत
- साहित्यिक स्रोत
- विदेशी यात्रियों का विवरण

पुरातात्त्विक स्रोत

- अभिलेख
- स्मारक
- सिक्के

अभिलेख

यद्यपि शाही अभिलेखों की संख्या कम है, परंतु सल्तनतकालीन मस्जिदों तथा भवनों की दीवारों पर फारसी भाषा में खुदे अभिलेख मिलते हैं, जैसे– कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद और इल्तुतमिश के मकबरे की दीवारों पर अंकित अभिलेख, अलाई दरवाज़े पर अंकित पवित्र कुरान की आयतें आदि भी महत्त्वपूर्ण हैं। ये अभिलेख निजी हैं तथा इनसे शासकों के नाम और तिथियों का बोध होता है।

स्मारक

- **कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद :** यह भारत की पहली तुर्क मस्जिद है। इसका निर्माण कुतुबुद्दीन ने रायपिथौरा किले के स्थल पर करवाया था। इसमें हिंदू-मुस्लिम स्थापत्य कला का मिश्रण है। इसमें खड़ी पंक्तियों में की गई नक्काशी में ज्यामिति डिज़ाइनों तथा फूल-पत्तियों का मिश्रण है। कालांतर में अलाउद्दीन खिलजी ने इसके स्तंभों पर कुरान की आयतें अंकित करवाई।
- **कुतुबमीनार :** कुतुबुद्दीन ने इसका निर्माण शुरू करवाया और इल्तुतमिश ने इसे पूरा करवाया। 72.5 मीटर ऊँची और लाल बलुआ पत्थर से निर्मित इस मीनार में पाँच मंज़िलें हैं। इस मीनार का नाम सूफी संत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के नाम पर रखा गया।

- **इब्नबतूता :** यह मोरक्को का रहने वाला था तथा मुहम्मद तुगलक के काल में भारत आया था। मुहम्मद बिन तुगलक ने उसे दिल्ली के काज़ी पद पर नियुक्त किया था। उसने अपनी रचना किताब-उल-रेहला में भारतीय खान-पान, रहन-सहन, धर्म, उत्सव, संगीत के साथ-साथ प्रशासनिक व्यवस्था, डाक व्यवस्था, गुप्तचर प्रणाली, कृषि आदि का लेखांकन किया है। वह मदुरै के सुल्तान का भी दरबारी था।
- **निकोलो कोंटी :** यह देवराय प्रथम के शासनकाल में विजयनगर की यात्रा पर आने वाला पहला यूरोपीय था। इसने विजयनगर की प्रशंसा करते हुए लिखा कि नगर की परिधि साठ मील की है और इसकी दीवारें पहाड़ों तक गई हैं तथा नीचे घाटियों को भी घेरे हुई हैं।
- **अब्दुर्रज्ज़ाक :** यह तैमूर वंश के शासक शाहरुख का राजदूत बनकर जमोरिन के दरबार में आया था। इसने देवराय द्वितीय के शासनकाल में विजयनगर की यात्रा की और वहाँ की सामाजिक-आर्थिक समृद्धि का वर्णन किया है।
- **अफानासी निकितिन :** मुहम्मद तृतीय के शासनकाल में बहमनी राज्य की यात्रा पर आया था। रूसी घोड़ों का यह व्यापारी काफी समय तक बीदर में रहा तथा बहमनी दरबार, सेना और जनता के जनजीवन पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डाला।

सल्तनतकालीन प्रमुख साहित्यिक रचनाएँ

रचनाएँ	रचनाकार	विवरण
किताब-उल-हिंद	अलबरूनी	अरब आक्रमणकारियों के साथ भारत आया।
तबकात-ए-नासिरी	मिनहाज-उस-सिराज	इस्लाम के उदय और उसके पैगंबरों सहित नासिरुद्दीन महमूद के शासनकाल तक का विवरण
तारीख-ए-फिरोज़शाही	जियाउद्दीन बरनी	बलबन के शासनकाल से लेकर फिरोज़शाह तुगलक के शासन के प्रारंभिक छह वर्षों का विवरण
खजाइन-उल-फुतूह	अमीर खुसरो	अलाउद्दीन खिलजी के दक्षिण सैन्य अभियान का उल्लेख
तुगलकनामा	अमीर खुसरो	तुगलक वंश का विवरण
नूह-सिपिहर	अमीर खुसरो	भारतीय जलवायु, संस्कृति आदि का वर्णन
फुतूह-उस-सलातीन	इसामी	गज़नी राज्य की स्थापना से लेकर बहमनी राज्य के उदय का विवरण
फुतुहात-ए-फिरोज़शाही	फिरोज़शाह तुगलक	यह फिरोज़शाह तुगलक द्वारा जनता के कल्याण हेतु बनाई गई नीतियों का संग्रह
रेहला	इब्नबतूता	मुहम्मद तुगलक के शासनकाल के प्रशासन तथा सामाजिक-आर्थिक जीवन का विवरण
फतवा-ए-जहाँदारी	बरनी	सल्तनतकालीन राजनीति, प्रशासन आदि का वर्णन
तारीख-ए-मुबारकशाही	याहिया-बिन-अहमद	मुहम्मद गोरी के सिंहासनारोहण से लेकर सैय्यद वंश के सुल्तान मुहम्मदशाह का उल्लेख
तारीख-ए-सलातीन-ए-अफगान	अहमद यादगर	बहलोल लोदी से लेकर हेमू की मृत्यु तक का विवरण

- सैनिक चौकियों का निर्माण;
- भटेर, सिरसा, भटिंडा आदि क्षेत्रों में दुर्गों का निर्माण;
- सीमांत क्षेत्रों की सुरक्षा के लिये अपने विश्वस्त सैनिकों की नियुक्ति;
- पुराने दुर्गों की मरम्मत;
- साम्राज्य विस्तार नीति का त्याग।

राजत्व सिद्धांत

बलबन के राजत्व सिद्धांत की विशेषता अर्द्धदैवी स्वरूप थी। उसका मानना था कि शासक, कोई साधारण मनुष्य नहीं, बल्कि ईश्वर द्वारा चुना हुआ प्रतिनिधि है। बलबन के राजत्व सिद्धांत के बारे में के.ए. निज़ामी कहते हैं कि "बलबन दिल्ली सल्तनत का एकमात्र सुल्तान है, जिसने राजत्व सिद्धांत के विचारों को स्पष्ट रखा।" बलबन के राजत्व सिद्धांत संबंधी विचार निम्नलिखित हैं–

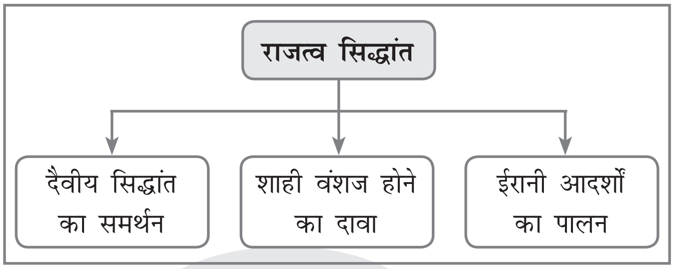

दैवीय सिद्धांत का समर्थन

- उसने राजत्व को 'नियाबते-खुदाई' एवं राजा को 'जिल्ले-अल्लाह' (ईश्वर की छाया) कहा। बलबन का मत था कि 'राजा का हृदय' ईश्वरीय कृपा का विशेष भंडार होता है।
- उसने राजत्व को निरंकुशता का शारीरिक रूप माना है।
- बलबन ने सत्ता में आने के बाद सामाजिक सभाओं में होने वाले नृत्य, संगीत और मद्यपान का निषेध किया।

शाही वंशज होने का दावा

- बलबन ने ईरानी नायक अफ्रासियाब का वंशज होने का दावा किया।
- इसने रक्त की शुद्धता और कुल की उच्चता पर बल दिया।
- बरनी के अनुसार, बलबन कहता था कि जब भी मैं किसी नीच कुल के व्यक्ति को देखता हूँ तो मेरी आँखों में अंगारे फूटने लगते हैं और क्रोध से मेरा हाथ तलवार पर चला जाता है।

ईरानी आदर्शों का पालन

- बलबन ने अपने दरबार को वैभवपूर्ण बनाने के लिये ईरानी आदर्शों को अपनाया।
- उसने ईरानी परंपराओं 'सिजदा' और 'पाबोस' तथा ईरानी त्योहार 'नवरोज़' की शुरुआत की।
- बलबन ने अपनी शक्ति और प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिये ईरानी राजत्व सिद्धांत को लागू किया।
- इस प्रकार, बलबन का राजत्व सिद्धांत प्रतिष्ठा और न्याय पर आधारित था।

बलबन के प्रशासनिक सुधार

बलबन ने सामंतों के बढ़ते प्रभाव को कमज़ोर किया तथा केंद्रीकृत प्रशासन विभाग की स्थापना की। साथ ही, सामंतों पर सैनिक निर्भरता को समाप्त किया। बलबन ने अपने विभिन्न कार्यों द्वारा प्रशासन को सुदृढ़ किया। ये कार्य निम्नलिखित हैं–

इकाई 4

खिलजी वंश
(Khilji Dynasty)

- महत्त्वपूर्ण स्रोत
- उदय
- प्रमुख शासक
  - ➤ जलालुद्दीन खिलजी
  - ➤ अलाउद्दीन खिलजी
  - ➤ अलाउद्दीन खिलजी का राजत्व सिद्धांत
  - ➤ अलाउद्दीन की साम्राज्य विस्तार नीति
  - ➤ अलाउद्दीन खिलजी की प्रशासनिक नीति
  - ➤ अलाउद्दीन खिलजी की आर्थिक नीति
  - ➤ आर्थिक नीति के परिणाम
  - ➤ अलाउद्दीन का मूल्यांकन
  - ➤ कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी
  - ➤ खिलजी वंश के पतन के कारण

महत्त्वपूर्ण स्रोत

- विभिन्न रचनाकारों ने अपनी साहित्यिक रचनाओं में खिलजी वंश का वर्णन किया है।
- अमीर खुसरो ने अपनी रचना 'मिफ्ताह-उल-फुतूह' में जलालुद्दीन खिलजी के सैन्य अभियानों तथा राजनीतिक घटनाओं का, 'तारीख-ए-अलाई' में अलाउद्दीन खिलजी के सैन्य अभियानों एवं शासन के आरंभिक वर्षों का तथा उल्लेख किया है। उसकी एक अन्य रचना 'आशिका' से अलाउद्दीन की गुजरात एवं मालवा विजयों का तथा 'नूह सिपिहर' से मुबारक खिलजी के शासनकाल की सामाजिक स्थिति का उल्लेख प्राप्त होता है।
- बरनी ने अपनी रचना 'तारीख-ए-फिरोज़शाही' में अलाउद्दीन की बाज़ार व्यवस्था का उल्लेख किया है। इसके अतिरिक्त, याहिया बिन अहमद की रचना 'तारीख-ए-मुबारकशाही' से भी खिलजी वंश का वर्णन प्राप्त होता है।

खिलजी वंश (1290–1320 ई.)

- जलालुद्दीन खिलजी (1290–1296 ई.)
- अलाउद्दीन खिलजी (1296–1316 ई.)
- कुतुबुद्दीन मुबारक खिलजी (1316–1320 ई.)

उदय

- बलबन के बाद उसके अयोग्य उत्तराधिकारियों के शासन में सत्ता कमज़ोर होती चली गई। सुल्तान कैकुबाद के शासनकाल में खिलजी शक्तिशाली होते गए तथा तेरहवीं सदी के अंत में उन्होंने तुर्कों की सत्ता पर नियंत्रण कर लिया। ध्यातव्य है कि खिलजी मूलतः साधारण तुर्क थे, जो गज़नवी तथा गोरी के आक्रमण के दौरान भारत आए थे।

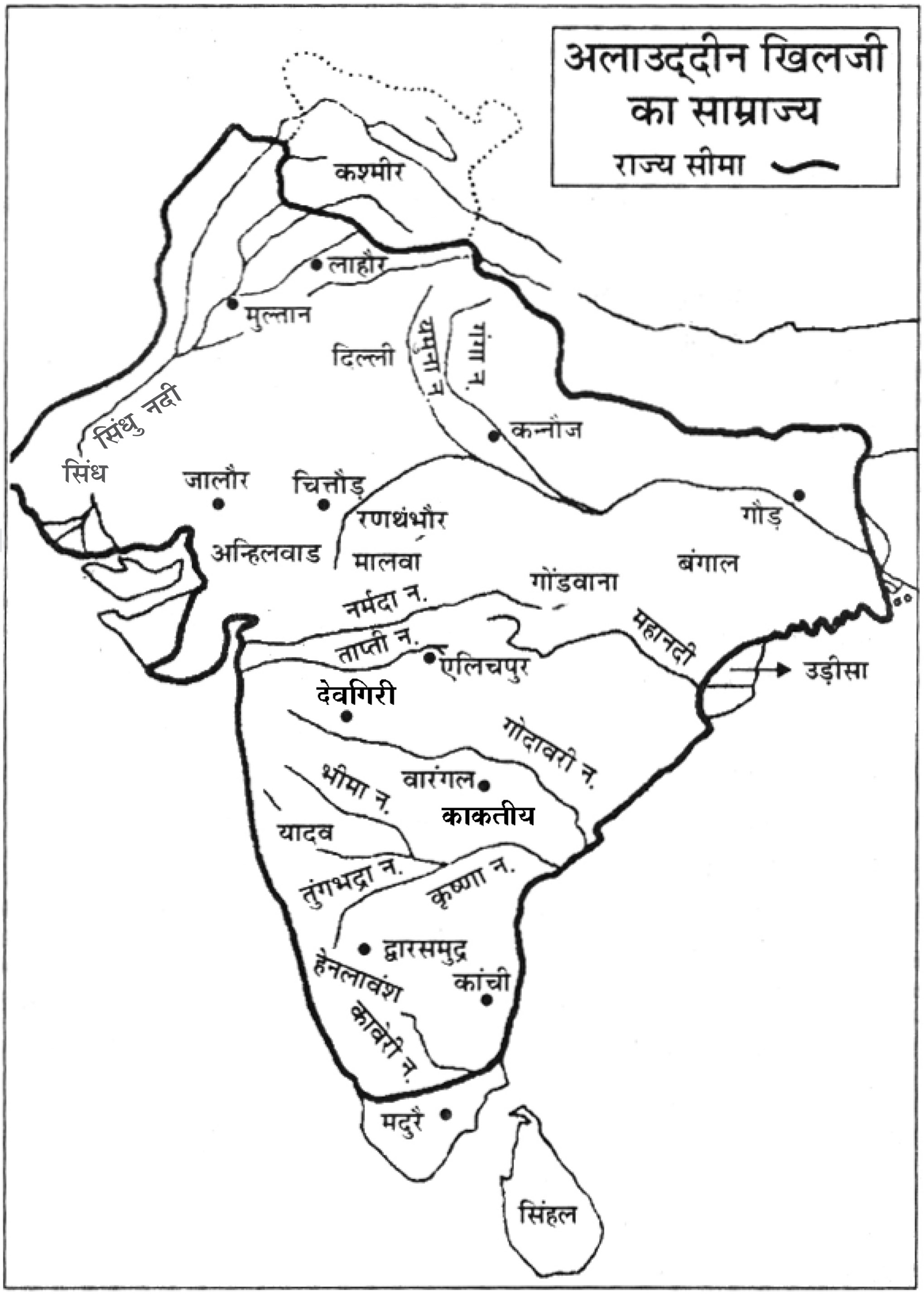
अलाउद्दीन खिलजी
का साम्राज्य
राज्य सीमा
कश्मीर
लाहौर
मुल्तान
दिल्ली
यमुना न.
गंगा न.
सिंधु नदी
सिंध
कन्नौज
जालौर
चित्तौड़
रणथंभौर
गौड़
अन्हिलवाड
मालवा
बंगाल
गोंडवाना
नर्मदा न.
महानदी
ताप्ती न.
एलिचपुर
उड़ीसा
देवगिरी
गोदावरी न.
भीमा न.
वारंगल
काकतीय
यादव
तुंगभद्रा न.
कृष्णा न.
द्वारसमुद्र
हेनलावंश
कांची
कावेरी न.
मदुरै
सिंहल

- जालौर की विजय के पश्चात् टोंक, बूँदी, मंडौर पर अलाउद्दीन ने अधिकार कर राजस्थान विजय को पूर्ण किया।
- राजस्थान विजय उसकी साम्राज्यवादी नीति का एक हिस्सा थी, क्योंकि गुजरात और दक्षिण भारत पर शासन के लिये सुरक्षित मार्ग राजस्थान विजय द्वारा ही संभव था।

अलाउद्दीन का उत्तर विजय अभियान

राज्य	शासक	अभियान का नेतृत्व	वर्ष	विशेष
गुजरात	राजा कर्ण (रायकरण) बघेल वंश	उलुग खाँ तथा नुसरत खाँ	1297-98 ई.	राजा कर्ण पराजित (देवगिरी शासक रामचंद्र के यहाँ शरण ली), गुजरात अभियान के दौरान जैसलमेर को विजित किया।
रणथंभौर	हम्मीरदेव (चौहान वंश)	उलुग खाँ तथा नुसरत खाँ	1301 ई.	राजपूतों की पराजय, स्त्रियों ने जौहर कर लिया।
चित्तौड़	रतनसिंह	अलाउद्दीन खिलजी	1303 ई.	चित्तौड़ पर अधिकार। उसका नाम खिज़्राबाद किया। खिज्र खाँ वहाँ का शासक बना।
मालवा	महलकदेव	ऐन-उल-मुल्क	1305 ई.	महलकदेव ने मांडू के किले में शरण ली। उसकी हत्या के बाद मांडू पर भी अधिकार, मालवा को सल्तनत में मिला लिया गया।
जालौर	कान्हड़देव	कमालुद्दीन	1311 ई.	कान्हड़देव के भाई को राज्य सौंपा।

दक्षिण विजय

दक्षिण भारत पर विजय अलाउद्दीन की प्रमुख उपलब्धि थी। वह दिल्ली सल्तनत का पहला सुल्तान था, जिसने दक्षिण में सफलता प्राप्त की थी। उसके दक्षिण अभियान का उद्देश्य धन प्राप्त करना था, लेकिन दक्षिण को राज्य में सम्मिलित करके उस पर शासन करना संभव नहीं था। उत्तर भारत से दक्षिण की अधिक दूरी, मार्ग की कठिनाई तथा भौगोलिक स्थिति के कारण अलाउद्दीन ने प्रभुसत्ता की जगह अधिराजत्व की नीति अपनाई। अलाउद्दीन ने दक्षिण राज्यों को जीतकर उनका विलय नहीं किया बल्कि उनसे केवल वार्षिक कर और नज़राना लेकर ही संतुष्ट हो गया। उसके दक्षिण अभियान का वर्णन बरनी कृत 'तारीख-ए-फिरोज़शाही', अमीर खुसरो की रचना 'खज़ाइन-उल-फुतूह' तथा इसामी कृत फुतूह-उस-सलातीन में मिलता है। अलाउद्दीन के सेनानायक मलिक काफूर ने दक्षिण विजय का नेतृत्व किया था।

देवगिरी

- सुल्तान बनने से पूर्व भी अलाउद्दीन ने 1296 ई. में देवगिरी के शासक रामचंद्र को पराजित किया था और वार्षिक कर देने के लिये बाध्य किया था।
- रामचंद्र के दो वर्षों तक कर न देने एवं गुजरात के शासक कर्ण को शरण देने के कारण ही मलिक काफूर ने 1307 ई. में देवगिरी पर आक्रमण किया।
- इस युद्ध में रामचंद्र पराजित हुआ और मलिक काफूर ने उसे दिल्ली भेज दिया, जहाँ अलाउद्दीन ने उसे 'रायरायन' की उपाधि देकर सम्मानित कर उसका राज्य वापस कर दिया। साथ ही, अलाउद्दीन ने उसे नवसारी का ज़िला भी शासन करने के लिये दे दिया।

इकाई 5

तुगलक वंश
(Tughlaq Dynasty)

- जानकारी के स्रोत
- पृष्ठभूमि
- गयासुद्दीन तुगलक (1320-25 ई.)
  - परिचय
  - चुनौतियाँ
  - सैन्य अभियान
  - प्रशासनिक एवं आर्थिक सुधार
- मुहम्मद बिन तुगलक (1325-51 ई.)
  - परिचय
  - विदेश नीति
  - राजत्व सिद्धांत
  - गृह नीति
  - सैन्य अभियान
  - प्रयोग एवं सुधार
  - राजधानी परिवर्तन
  - सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन
  - कृषि सुधार एवं दोआब में कर वृद्धि
  - मुहम्मद बिन तुगलक के विरुद्ध विद्रोह
- फिरोज़शाह तुगलक (1351-88 ई.)
  - सैन्य अभियान
  - प्रशासनिक सुधार

जानकारी के स्रोत

साहित्यिक स्रोत

- **तुगलकनामा :** यह खुसरो द्वारा रचित अंतिम कृति (कविता) है। इसमें तुगलक वंश की स्थापना का वर्णन है।
- **फुतुहात-ए-फिरोज़शाही :** यह फिरोज़ तुगलक द्वारा रचित है। इससे उसके शासन और धार्मिक नीति की जानकारी प्राप्त होती है। इसमें सैन्य अभियानों और शासन-प्रबंधन की विस्तृत जानकारी दी गई है।
- **तारीख-ए-फिरोज़शाही :** इस पुस्तक के लेखक 'जियाउद्दीन बरनी' हैं। इसमें मुहम्मद बिन तुगलक के प्रयोग एवं प्रसार की नीतियों का उल्लेख किया गया है, जैसे- दोआब में कर वृद्धि, राजधानी का परिवर्तन, सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन, विजय संबंधी योजनाएँ, मुहम्मद बिन तुगलक का चरित्र आदि।
- **तारीख-ए-फिरोज़शाही :** यह बरनी की पुस्तक का अगला क्रम है। शम्स-ए-शिराज अफीफ द्वारा लिखी गई इस पुस्तक में फिरोज़शाह तुगलक के शासनकाल का विवरण मिलता है।
- **फतवा-ए-जहाँदारी :** यह बरनी की रचना है। इसमें मुस्लिम शासकों के धार्मिक उत्कर्ष और जनता की कृतज्ञता का उल्लेख किया गया है। इसका संबंध राजनीतिक घटनाओं से नहीं है।
- **किताब-उल-रेहला :** इस पुस्तक की रचना अफ्रीकी यात्री इब्नबतूता ने की है। उसने भारतीय खान-पान, रहन-सहन, धर्म, उत्सव, संगीत के साथ-साथ प्रशासनिक व्यवस्था, डाक व्यवस्था, गुप्तचर प्रणाली, कृषि व्यवस्था आदि का वर्णन किया है।

पुरातात्त्विक स्रोत

- **मुल्तान की जामा मस्जिद :** इब्नबतूता ने इस मस्जिद के लेख में तातरियों के विरुद्ध 21 विजयों का उल्लेख किया है।

- उसने उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत तक की सीमाओं को एक सूत्र में बाँधने का प्रयास किया। इसी क्रम में उसने दिल्ली सल्तनत का विस्तार, उत्तर में हिमालय के तराई से लेकर वारंगल और देवगिरी (दक्षिण भारत) तथा पश्चिम में सिंध व गुजरात से बंगाल (पूर्वी भारत) तक किया।

विदेश नीति

- साम्राज्य विस्तार की नीति को आधार बनाकर मुहम्मद बिन तुगलक भारत में भूमि का एक छोटा कतरा भी छोड़ना नहीं चाहता था। इस तरह उसने वारंगल (तेलंगाना), माबर (कोरोमंडल), मदुरै (तमिलनाडु) और द्वारसमुद्र (कर्नाटक) तक के क्षेत्रों को दिल्ली सल्तनत के नियंत्रण में ले लिया।

- मुहम्मद बिन तुगलक भी अलाउद्दीन खिलजी की तरह शासन में किसी का हस्तक्षेप पसंद नहीं करता था। इसी कारण उसने उलेमाओं को प्रशासनिक हस्तक्षेप से दूर रखा।

गृह नीति

- मुहम्मद बिन तुगलक ने सत्ता प्राप्ति के पश्चात् राजस्व सुधार की ओर ध्यान देना शुरू किया। इसी क्रम में उसने प्रांतों के सूबेदारों को आय एवं व्यय का लेखा-जोखा तैयार करने का आदेश दिया। वह अलग-अलग प्रांतों में एकसमान राजस्व व्यवस्था रखना चाहता था।
- मुहम्मद बिन तुगलक ने कृषि सुधार के लिये नवीन प्रयोग किये। उसने पृथक् रूप से कृषि विभाग की स्थापना की जिसे दीवान-ए-अमीर कोही कहा जाता था।

सैन्य अभियान

- **खुरासान अभियान (1330-31 ई.):** मुहम्मद बिन तुगलक ने शासन के आरंभिक दौर से ही खुरासान पर विजय पाने की योजना बनाई थी। इस अभियान के लिये उसने एक विशाल सेना का निर्माण किया तथा सैनिकों को अग्रिम वेतन के रूप में 'इक्ता' प्रदान किया, किंतु अचानक मध्य एशिया में राजनीतिक परिवर्तन के कारण उसे अपने अभियान को रोकना पड़ा। इस सैन्य अभियान में अत्यधिक धन व्यय होने के कारण उस पर आर्थिक बोझ बढ़ा और सैनिकों के बीच असंतोष उत्पन्न हो गया।
- **कराचिल अभियान (1337-38 ई.):** खुरासान अभियान के कुछ समय पश्चात् मुहम्मद बिन तुगलक ने कराचिल अभियान किया। इस अभियान का उद्देश्य पहाड़ी राज्यों को अपने आधिपत्य में लेना था, ताकि दिल्ली सल्तनत की उत्तरी सीमाओं को सुरक्षित रखा जा सके। इस अभियान का आरंभ हिमालय के कुमाऊँ क्षेत्र से हुआ। कराचिल का क्षेत्र सामरिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण था।

प्रयोग एवं सुधार

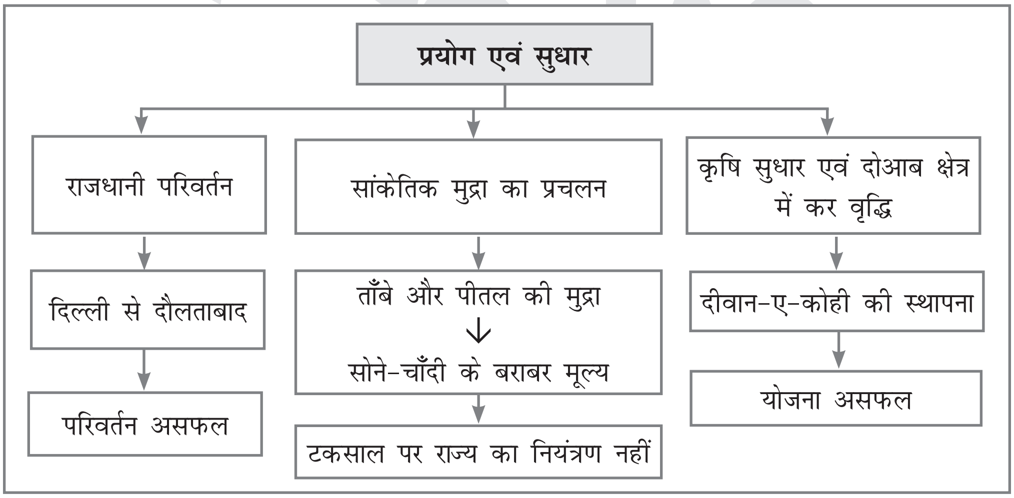

मुहम्मद बिन तुगलक ने दिल्ली सल्तनत को एक मज़बूत स्तंभ के रूप में खड़ा रखने के लिये प्रशासनिक एवं विस्तारवादी नीतियों में कई प्रयोग एवं सुधार किये। अपने नवीन विचारों से राज्य और प्रशासनिक तंत्र को पुनः सशक्त करने का प्रयास किया।

इकाई 6

सैय्यद और लोदी वंश
(Sayyid and Lodi Dynasties)

सैय्यद वंश
- परिचय
- प्रमुख शासक
  - ➤ खिज्र खाँ
  - ➤ मुबारकशाह
  - ➤ मुहम्मदशाह
  - ➤ अलाउद्दीन आलमशाह

लोदी वंश
- महत्त्वपूर्ण स्रोत
- प्रमुख शासक
  - ➤ बहलोल लोदी
  - ➤ सिकंदर लोदी
  - ➤ इब्राहिम लोदी

सैय्यद वंश (1414 – 1450 ई.)

परिचय

सैय्यद अरब से भारत आए थे। ये दिल्ली सल्तनत के प्रशासनिक कार्यों में सेवारत थे। तुगलक वंश के अंतिम सुल्तान महमूदशाह की मृत्यु तथा तैमूर के आक्रमण के बाद उत्पन्न अव्यवस्था का लाभ उठाकर खिज्र खाँ ने सैय्यद वंश की स्थापना की थी। सैय्यदों का शासनकाल भी खिलजियों के समान कम अवधि वाला था। तुगलक शासन में शुरू हुई सल्तनत के विघटन की प्रक्रिया सैय्यद शासकों के समय में भी जारी रही। इनके शासनकाल के दौरान दिल्ली सल्तनत की सीमा और भी सीमित हो गई। याहिया-बिन-अहमद सरहिंदी की रचना 'तारीख-ए-मुबारकशाही' से सैय्यद वंश की जानकारी प्राप्त होती है। सैय्यद शासक मुबारकशाह ने याहिया-बिन-अहमद सरहिंदी को संरक्षण प्रदान किया था।

प्रमुख शासक

खिज्र खाँ (1414-21 ई.)

- खिज्र खाँ के पूर्वज फिरोज़ तुगलक के अमीर थे। फिरोज तुगलक ने खिज्र खाँ की योग्यता से प्रभावित होकर उसे मुल्तान की सूबेदारी प्रदान की थी, किंतु सारंग खाँ से मतभेद के चलते खिज्र खाँ को अपना पद छोड़ना पड़ा। 1398 ई. में तैमूर के आक्रमण के समय खिज्र खाँ ने उसकी सहायता की। फलस्वरूप तैमूर ने उसे लाहौर, मुल्तान और दीपालपुर का सूबेदार नियुक्त कर दिया। यहीं से उसकी राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा बढ़ने लगी और 1414 ई. में उसने दौलत खाँ को परास्त कर दिल्ली पर अधिकार कर लिया।
- ध्यातव्य है कि खिज्र खाँ ने सुल्तान की उपाधि धारण नहीं की। उसने 'रैयत-ए-आला' की उपाधि के साथ ही शासन किया। वह तैमूर के पुत्र शाहरुख को नियमित कर भेजता था और उसका नाम खुतबे में शामिल किया। उसने सिक्कों पर तुगलक शासकों के ही नाम रहने दिये।

इकाई 7

दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था
(Administration of Delhi Sultanate)

दिल्ली सल्तनत की प्रशासनिक व्यवस्था

- परिचय
- केंद्रीय प्रशासन
  - ➤ प्रांतीय प्रशासन
  - ➤ स्थानीय प्रशासन
- इक्ता व्यवस्था
- आर्थिक स्थिति
- सल्तनतकालीन सामाजिक जीवन
- सल्तनतकालीन स्थापत्य कला
- सल्तनतकालीन साहित्य

परिचय

भारत में तुर्कों द्वारा स्थापित राज्य का विस्तार उत्तर भारत से लेकर दक्षिण में मदुरै तक हो चुका था। इस विस्तृत सीमा को नियंत्रित करने के लिये एक सुदृढ़ प्रशासनिक तंत्र की आवश्यकता थी। इस प्रशासनिक तंत्र का विकास अरबी-फारसी पद्धति के आधार पर हुआ, जिसका केंद्रबिंदु सुल्तान था। भारत में दिल्ली सल्तनत की स्थापना के साथ ही एक नए शासक वर्ग का उदय हुआ, जिससे नई प्रशासनिक संस्थाओं का भी उदय होने लगा। कुछ प्रशासनिक संस्थाओं की जड़ें अरब और मध्य एशिया तक फैली थीं, जहाँ से यह नया शासक वर्ग आया था, जबकि अन्य की उत्पत्ति भारत में ही हुई थी। नई प्रशासनिक प्रणाली और संरचनाओं ने सल्तनत को सुदृढ़ बनाने में योगदान दिया।

खलीफा और सुल्तान के मध्य संबंध

- मुस्लिम शासन प्रणाली शरीयत पर आधारित थी। पैगंबर के पश्चात् खलीफा के इस्लामिक जगत के धार्मिक प्रधान होने के कारण दिल्ली सल्तनत के अधिकांश सुल्तानों द्वारा उनकी सत्ता को स्वीकार्यता प्रदान करते हुए खिल्लत प्राप्त करने की कोशिश की गई, किंतु खलीफा नाममात्र का ही प्रधान था। इनका सुल्तान पर कोई नियंत्रण नहीं होता था।
- इल्तुतमिश सल्तनत का पहला सुल्तान था, जिसने खलीफा 'अलमुंतसिर' से शासन करने की स्वीकृति प्राप्त की, किंतु उसके प्रभुत्व को स्वीकार नहीं किया।
- बलबन ने 'जिल्ले अल्लाह' की उपाधि ली तथा सिक्कों पर खलीफा का नाम उत्कीर्ण करवाया। अलाउद्दीन खिलजी ने यामीन-उल-खिलाफत और नासिर-ए-उल-मोमीन के रूप में खुद को प्रदर्शित किया, किंतु खलीफा का वास्तविक प्रभुत्व स्वीकार नहीं किया।

सुल्तान एवं उलेमा

- सल्तनत काल में इस्लामिक कानून 'हदीस और शरीयत' पर आधारित था। इस्लामिक धर्माचार्य एवं शरीयत कानून के व्याख्याकारों के वर्ग को 'उलेमा' कहा जाता था। सुल्तान स्वयं शरीयत की व्याख्या नहीं कर सकता था।

केंद्रीय प्रशासन

→ **सुल्तान**
- मुख्य प्रधान
- **कार्य–** ईश्वरीय नियमों का पालन और व्याख्या करना।
- पूर्ण रूप से निरंकुश
- **परामर्श–** मजलिस-ए-खलवत (मंत्रिपरिषद्) से सुल्तान की इच्छा सर्वोपरि।

→ **मंत्रिपरिषद्**
- नियुक्ति सुल्तान करता था।
- प्रशासन संचालन हेतु नायब-ए-मुमालिक पद का सृजन (राज्य की वास्तविक शक्ति)
- **प्रमुख मंत्री–** दीवान-ए-अर्ज़ (सैन्य विभाग)
- अधिकारी–
  - ➤ दीवान-ए-कज़ा (न्याय विभाग)
  - ➤ नायब-ए-वज़ीर (उप-वज़ीर)
  - ➤ दबीर-ए-मुमालिक (मुख्य सचिव)
  - ➤ बरीद-ए-मुमालिक (गुप्तचर विभाग)
  - ➤ अखुरबक (शाही अस्तबल)
  - ➤ काज़ी-उल-कुजात (काज़ी का प्रधान)

→ **न्याय प्रशासन**
- प्रधान–सुल्तान
  - ➤ काज़ी–उल-मुमालिक (न्याय प्रमुख)
  - ➤ दीवान-ए-कज़ा (न्याय कार्यों की देखरेख)
  - ➤ अमीर-ए-दाद (न्याय का मुख्य अधिकारी)

→ **सैन्य प्रशासन**
- तुर्क और मंगोल पद्धति पर आधारित
- शाही सेना का गठन इल्तुतमिश ने किया
- दशमलव प्रणाली पर आधारित
- प्रांतीय सेना (हश्म-ए-अतरफ)

मंत्रिपरिषद्

- मंत्रियों की नियुक्ति सुल्तान स्वयं करता था। उनका मुख्य कार्य सुल्तान के आदेशानुसार प्रशासनिक संचालन करना था।

- 'नायब-ए-मुमालिक' नामक पद का सृजन किया गया था। इसके पास राज्य की वास्तविक शक्ति होती थी। इसके अतिरिक्त 'सद्र-उस-सुदूर' और 'दीवान-ए-कज़ा' नामक पदों को मंत्रियों के समकक्ष कर दिया गया।
- **केंद्रीय प्रशासन में मंत्रियों के अलावा अन्य अधिकारी**
  - मीर-ए-सामाँ (महल तथा कारखानों का प्रबंधक)
  - अमीर-ए-हाजिब (दरबारी शिष्टाचार से संबंधित मुख्य अधिकारी)
- सुल्तान, अधिकारियों और मंत्रियों की सहायता से प्रशासन पर नियंत्रण रखता था। केंद्रीय प्रशासन में मुख्य स्तंभ के रूप में मंत्री तथा शाही दीवान होते थे, किंतु इसका मुख्य प्रबंधक सुल्तान ही होता था।
- केंद्रीय प्रशासन के विभागों तथा इनकी शक्ति का निर्धारण अब्बासी शासन व्यवस्था के आधार पर होता था।
- दिल्ली सल्तनत के प्रमुख चार स्तंभ थे–

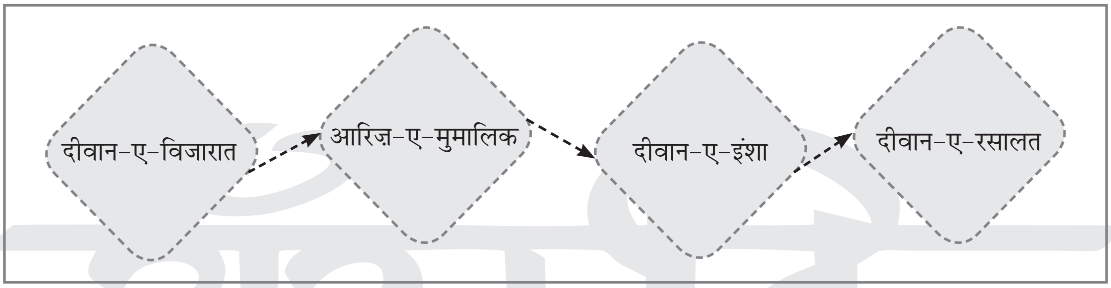

दीवान-ए-विजारात

- यह सभी मंत्रियों का प्रमुख होता था, किंतु मुख्य रूप से यह वित्त विभाग का मंत्री होता था, जिसकी सहायता 'मुशरिफ-ए-मुमालिक' एवं 'मुस्तौफी-ए-मुमालिक' नामक अधिकारी करते थे। मुशरिफ-ए-मुमालिक का कार्य राजस्व वसूल तथा स्थानीय लेखा-जोखा की जाँच-पड़ताल करना था। वहीं, मुस्तौफी-ए-मुमालिक का कार्य राज्य में होने वाले खर्चे को नियंत्रित करना था।
- दीवान-ए-विजारात का नियंत्रण सार्वजनिक प्रशासन के लगभग सभी क्षेत्रों पर होता था। राजस्व की वसूली एवं उसका निर्धारण, व्यय पर नियंत्रण करना, हिसाब का लेखा-जोखा रखना, वेतन वितरण करना इत्यादि इसके प्रमुख कार्य थे।

आरिज़-ए-मुमालिक

- आरिज़-ए-मुमालिक को 'रावत-ए-अर्ज़' भी कहा जाता था। यह सैन्य विभाग का मुख्य अधिकारी होता था, जिसे 'महाप्रबंधक' भी कहा जाता था। यह राज्य का सेनापति नहीं, बल्कि असैन्य अधिकारी होता था। इसका मुख्य कार्य घोड़ों का विवरण रखना, सैनिकों की भर्ती, अस्त्र-शस्त्र, वेतन और सैन्य अभियान से संबंधित सामग्रियों की व्यवस्था तथा सेना का निरीक्षण करना था।
- केंद्रीय प्रशासन का महत्त्वपूर्ण विभाग 'दीवान-ए-अर्ज़' (सैन्य विभाग) था। इसकी स्थापना बलबन ने की थी। इस पद पर बलबन ने अहमद अयाज़ की नियुक्ति की थी।
- मुगल काल में 'दीवान-ए-अर्ज़ को 'मीरबख्शी' कहा गया।
- आरिज़-ए-मुमालिक का मंत्रालय दीवान-ए-अर्ज़ (सैन्य विभाग) कहलाता था।

सैन्य प्रशासन

- दिल्ली सल्तनत की सैन्य व्यवस्था तुर्क और मंगोल पद्धतियों पर आधारित थी। समसामयिक काल में लगातार बढ़ती समस्याओं (आंतरिक विद्रोहों और मंगोलों के आक्रमण का भय आदि) को ध्यान में रखकर सुल्तानों ने सेना का गठन किया जिसका प्रमुख स्वयं 'सुल्तान' होता था।
- सल्तनत काल में सत्ता सैनिकों पर केंद्रित होती थी। दिल्ली सल्तनत का पहला सुल्तान इल्तुतमिश था, जिसने शाही सेना का गठन किया था। उसकी केंद्रीय सेना को 'हश्म-ए-कल्ब' तथा प्रांतीय सेना को 'हश्म-ए-अतरफ' कहा जाता था। गयासुद्दीन तुगलक ने सैनिकों को आर्थिक रूप से तुष्ट करने के लिये अलाउद्दीन खिलजी की नीतियों को अपनाया। फिरोज़शाह तुगलक ने सैनिकों को इक्ता प्रदान किया, जो आगे चलकर वंशानुगत हो गया।
- सेना का गठन मंगोलों की दशमलव प्रणाली के आधार पर किया गया था। इस प्रणाली के आधार पर सबसे पहले अलाउद्दीन खिलजी ने अपनी सेना का गठन किया। इसके पश्चात् मुहम्मद बिन तुगलक ने इसी आधार पर अपनी सेना का गठन किया।
- दशमलव प्रणाली के आधार पर निम्नलिखित प्रकार से सेना संगठित की जाती थी–
  - 10 सैनिकों पर एक 'सर-ए-खेल'
  - 10 'सर-ए-खेल' पर एक 'सिपहसालार'
  - 10 'सिपहसालार' पर एक 'अमीर'
  - 10 'अमीर' पर एक 'मलिक'
  - 10 'मलिक' पर एक 'खान'
- लोदी काल के दौरान शाही सेना का स्वरूप कमज़ोर होकर कबीलाई सैन्य दस्तों में सिमटकर रह गया।
- फिरोज़शाह तुगलक ने नगद वेतन देने की व्यवस्था को समाप्त कर दिया जिसे 'इतलाक' कहा जाता था।
- सैन्य संगठन में पदों का विभाजन दशमलव प्रणाली के आधार पर किया गया था।

प्रांतीय प्रशासन

- प्रांतीय प्रशासन में केंद्रीय शासन की भाँति कार्य संचालन के लिये अलग-अलग विभाग होते थे किंतु दोनों प्रशासनिक अधिकारियों के पद एकसमान नहीं थे। प्रांतों का स्वरूप निश्चित नहीं था तथा प्रशासनिक दृष्टिकोण से प्रांतों को अविजित या अर्द्धविजित क्षेत्रों में विभाजित कर दिया जाता था। प्रांतों को इक्ता, सूबा, खिता या विलायत नाम से जाना जाता था।

प्रांतीय प्रशासन

- केंद्र के समान अलग-अलग विभाग
- इक्ता, सूबा और खिता नाम से प्रसिद्ध
- प्रांत गवर्नर
  - नियुक्ति सुल्तान
  - मुफ्ती
  - वली
  - इक्तेदार
- मुख्य अधिकारी
  - साहिब-ए-दीवान (वित्त विभाग)
  - प्रांतीय आरिज़ (सैन्य संबंधित)
- प्रांतों की संख्या– 4, 12 और 23
- प्रांतों को शिक (ज़िला) कहा जाता था।
- प्रशासनिक अधिकारी
  - शिकदार–प्रमुख–आमिल

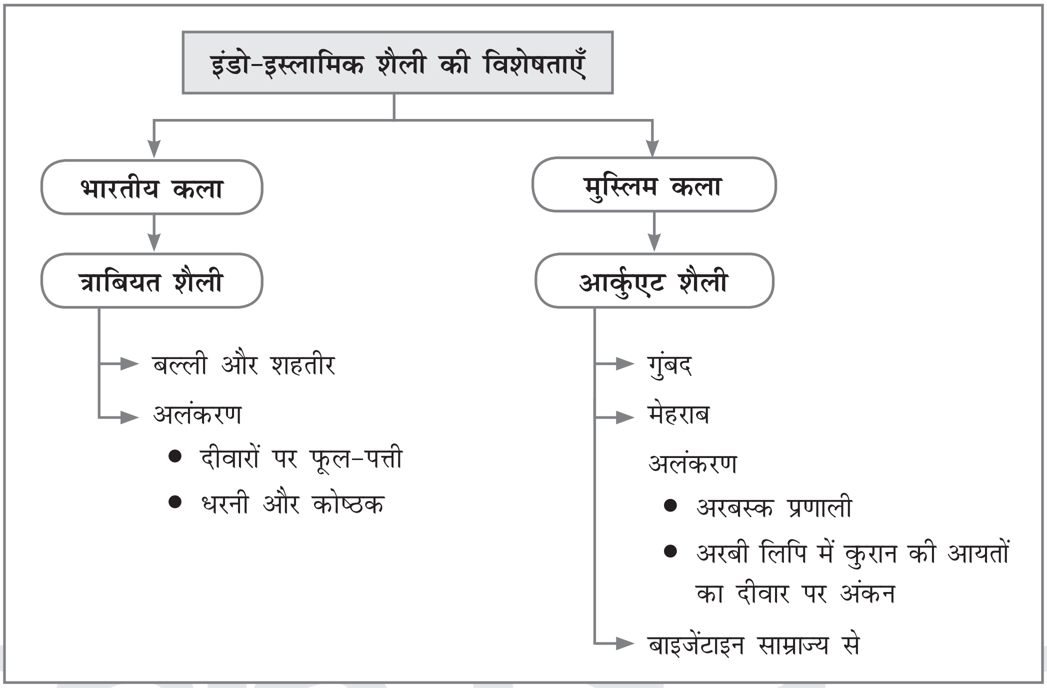

इल्बरीकालीन स्थापत्य

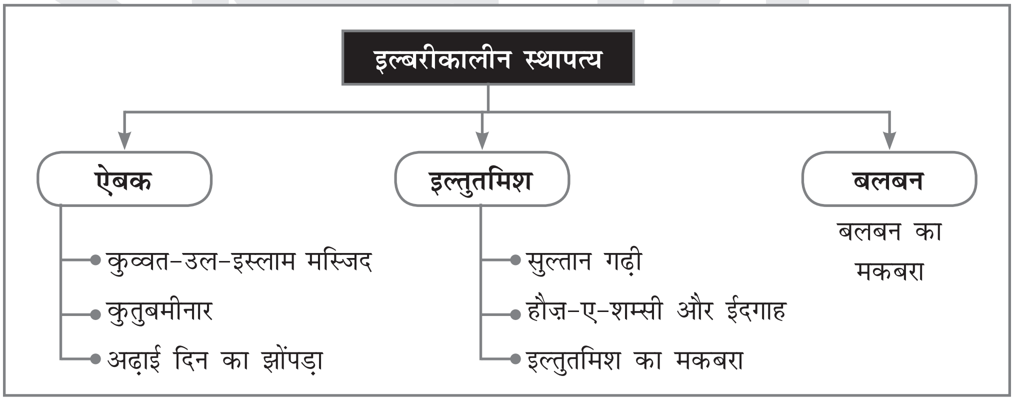

- **कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद :** कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1192 ई. में तराइन के युद्ध में पृथ्वीराज को पराजित कर उसके किले 'रायपिथौरा' में 'कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद' का निर्माण करवाया। इल्तुतमिश ने 1230 ई. में मस्जिद के प्रांगण को दोगुना कराया। 'इंडो-इस्लामिक शैली' में निर्मित स्थापत्य कला का यह पहला ऐसा उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें हिंदू प्रभाव की झलकियाँ दिखाई पड़ती हैं।
- **कुतुबमीनार :** इस मीनार के निर्माण का आरंभ दिल्ली में ऐबक ने करवाया था, जो इल्तुतमिश के काल में पूर्ण हुआ। इसका निर्माण सूफी संत बख्तियार काकी के सम्मान में किया गया था। इसकी क्षतिग्रस्त चौथी मंजिल का निर्माण फिरोज़शाह तुगलक ने करवाया था।

- **अढ़ाई दिन का झोंपड़ा :** कुतुबुद्दीन ऐबक ने अजमेर में विग्रहराज विसलदेव चतुर्थ की संस्कृत पाठशाला को ध्वस्त कर उसके स्थान पर 'अढ़ाई दिन का झोंपड़ा' बनवाया था। रचना और शैली में यह कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद के समान है। मार्शल के अनुसार, इसका निर्माण अढ़ाई दिन में हुआ था, इसलिये इसे अढ़ाई दिन का झोंपड़ा कहा गया है।
- **सुल्तान गढ़ी :** इसका निर्माण इल्तुतमिश ने दिल्ली में अपने पुत्र नासिरुद्दीन महमूद के लिये करवाया था। यह तुर्क शासकों द्वारा निर्मित प्रथम मकबरा है।
- **हौज़-ए-खास (शम्सी ईदगाह) :** इल्तुतमिश ने बदायूँ में हौज़-ए-खास (शम्सी ईदगाह) और जामा मस्जिद का निर्माण करवाया था।
- **इल्तुतमिश का मकबरा :** इसका निर्माण इल्तुतमिश ने करवाया था। इसकी दीवारों पर कुरान की आयतें उत्कीर्ण हैं।
- **अतारकिन का दरवाज़ा :** इल्तुतमिश ने नागौर (राजस्थान) में ख्वाज़ा हमीदुद्दीन नागौरी की स्मृति में बनवाया था, किंतु इसका पुनर्निर्माण मुहम्मद बिन तुगलक ने करवाया था।
- **मोइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह :** इसका निर्माण इल्तुतमिश ने करवाया था।
- **बलबन का मकबरा :** बलबन ने रायपिथौरा किले के नजदीक लाल महल और अपने मकबरा का निर्माण करवाया था।

खिलजीकालीन स्थापत्य

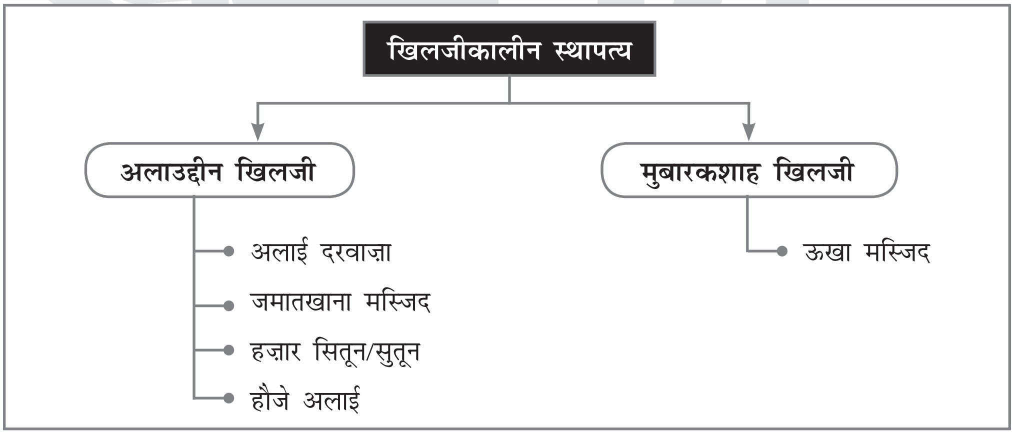

- **अलाई दरवाज़ा :** अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली में कुतुबमीनार के समीप इसका निर्माण करवाया था।
- **जमातखाना मस्जिद :** अलाउद्दीन खिलजी ने निजामुद्दीन औलिया की दरगाह के निकट दिल्ली में इस मस्जिद का निर्माण करवाया था।
- **हज़ार सितून/सुतून :** इस हज़ार स्तंभों वाले भवन का निर्माण अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली में करवाया था।
- **हौजे अलाई :** अलाउद्दीन खिलजी ने सीरी नगर में इसका निर्माण करवाया था।
- **ऊखा मस्जिद :** मुबारकशाह खिलजी ने राजस्थान में इसका निर्माण करवाया था।

इकाई 8

क्षेत्रीय राज्यों का उदय
(Rise of Regional States)

- परिचय
  - बंगाल
  - असम
  - उड़ीसा
  - कश्मीर
  - मालवा
  - जौनपुर
  - गुजरात
  - मेवाड़

परिचय

- चौदहवीं सदी में तैमूर आक्रमण से तुगलक वंश और दिल्ली सल्तनत के पतन की शुरुआत हुई। समकालीन समय में दिल्ली के सुल्तानों के लिये सल्तनत के अधीन राज्यों पर नियंत्रण रखने में कठिनाई होने लगी थी। इसके परिणामस्वरूप सल्तनत के अधीन छोटे-छोटे राज्यों ने खुद को स्वतंत्र कर लिया।
- एक तरफ जहाँ दक्कन, बंगाल, सिंध और मुल्तान ने दिल्ली सल्तनत से अपने संबंध विच्छेद कर लिये थे, वहीं दूसरी तरफ गुजरात, मालवा और जौनपुर के सूबेदारों ने अपनी-अपनी स्वतंत्रता की घोषणा शुरू कर दी थी।
- ऐसा माना जाता है कि राजनीतिक दृष्टिकोण से अलग-अलग राज्यों के मध्य होने वाले संघर्ष सीमावर्ती क्षेत्रों से आगे न बढ़ सके। फलतः पूर्व, पश्चिम और उत्तर में स्थित राज्यों के मध्य शक्ति-संतुलन का अभाव दिखा।

बंगाल

- बंगाल पर दिल्ली सल्तनत की पकड़ कमज़ोर होने के कारण इस क्षेत्र में कुलीन वर्गों ने शासन करना आरंभ कर दिया। इसके चलते बंगाल पर दिल्ली सल्तनत का प्रभुत्व कम होने लगा। इल्तुतमिश ने 1225 ई. में बंगाल के विरुद्ध सैन्य अभियान किया।
- बंगाल पर दिल्ली सल्तनत का नियंत्रण रखने के लिये बलबन ने 1281 ई. में बुगारा खाँ को बंगाल का गवर्नर नियुक्त किया। बलबन की मृत्यु के पश्चात् बुगारा खाँ ने खुद को बंगाल का शासक नियुक्त किया।
- जिस समय मुहम्मद बिन तुगलक दिल्ली सल्तनत के अधीन अलग-अलग हिस्सों में भड़क रहे विद्रोहों को कुचलने में व्यस्त था, उसी समय (1338 ई. में) बंगाल ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। चार वर्षों के पश्चात् 'लखनौती' और 'सोनार गाँव' को इलियास खाँ नामक अमीर ने अपने अधिकार में ले लिया। अब इलियास खाँ का पूरे बंगाल पर नियंत्रण हो गया।

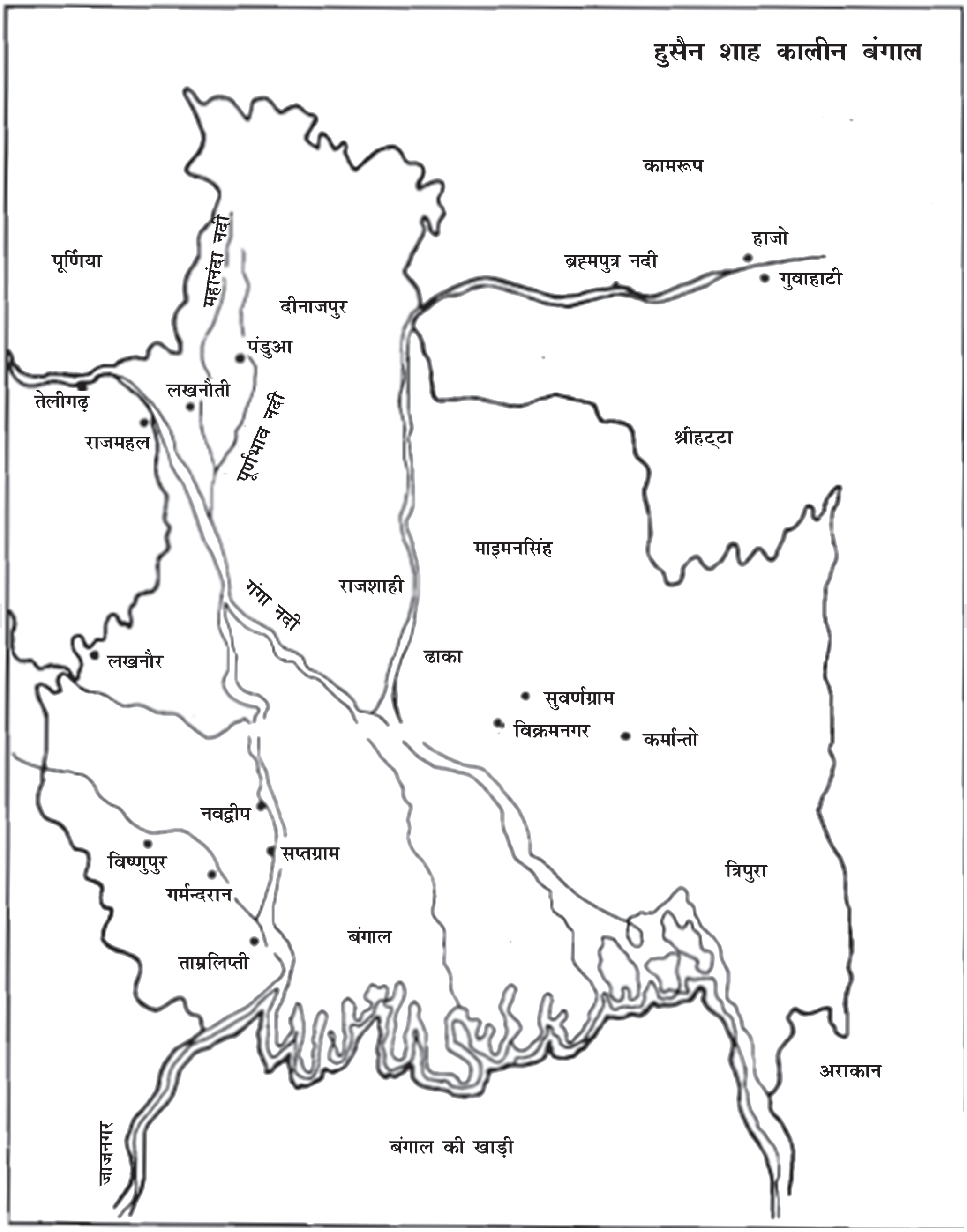

- इलियास खाँ ने बंगाल का सुल्तान बनने के बाद 'शम्सुद्दीन इलियास खाँ' की उपाधि धारण की तथा बंगाल में अपने साम्राज्य का विस्तार करने का निर्णय लिया। उसकी बढ़ती महत्त्वाकांक्षा ने फिरोषशाह तुगलक को बंगाल पर आक्रमण करने पर मषबूर किया। इलियास खाँ द्वारा विजित क्षेत्रों (तिरहुत, चंपारण, गोरखपुर और बनारस) से होते हुए फिरोषशाह तुगलक ने राजधानी पांडुआ (बंगाल) को अपने अधिकार में ले लिया। इसके बाद दोनों

इकाई 9

विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य
(Vijayanagar and Bahamani Dynasty)

विजयनगर साम्राज्य

- महत्त्वपूर्ण स्रोत
- संगम वंश
- सालुव वंश
- तुलुव वंश
- अरविदु वंश
- प्रशासनिक व्यवस्था
  - ➤ केंद्रीय प्रशासन
  - ➤ प्रांतीय प्रशासन
  - ➤ स्थानीय प्रशासन
- आर्थिक स्थिति
- सामाजिक स्थिति
- सांस्कृतिक स्थिति

बहमनी साम्राज्य

- परिचय
  - ➤ स्रोत
- प्रमुख शासक
  - ➤ अलाउद्दीन हसन बहमन शाह (1346-1358 ई.)
  - ➤ मुहम्मद प्रथम (1358-1375 ई.)
  - ➤ ताजुद्दीन फिरोज़ (1397-1422 ई.)
  - ➤ महमूद गवाँ
- बहमनी साम्राज्य का पतन
  - ➤ बहमनी साम्राज्य के पतन के कारण
- बहमनी साम्राज्य का प्रशासन
  - ➤ केंद्रीय प्रशासन
  - ➤ राजस्व व्यवस्था

विजयनगर साम्राज्य (1336-1649 ई.)

महत्त्वपूर्ण स्रोत

- साहित्यिक स्रोत
- विदेशी यात्रियों का विवरण

साहित्यिक स्रोत

- प्रमुख साहित्यिक ग्रंथों में विजयनगर के शासक कृष्णदेव राय द्वारा रचित **आमुक्तमाल्यद** प्रमुख ग्रंथ है। यह तेलुगू भाषा में है। इस रचना में राज्य के राजस्व और अर्थव्यवस्था का वर्णन किया गया है।
- अजीज उल्लाह तबतबा की रचना **बुरहान-ए-मआसिर** से भी विजयनगर की जानकारी मिलती है। इसमें विजयनगर और बहमनी साम्राज्य के मध्य हुए संघर्ष का वर्णन किया गया है।

विदेशी यात्रियों का विवरण

- निकोलो कोंटी ने 1420 ई. में देवराय प्रथम के शासनकाल में विजयनगर की यात्रा की। वह सामाजिक जीवन और नगर की भव्यता की प्रशंसा करता है। ईरानी राजदूत अब्दुर्रज्ज़ाक जिसने 1442-43 ई. में विजयनगर का भ्रमण किया (देवराय द्वितीय के शासनकाल में), ने राज्य के वैभव की प्रशंसा करते हुए कहा है कि यह विश्व के उत्कृष्ट नगरों में से एक है।

- सेना में उत्तम कोटि के अश्वारोहियों तथा कुशल तीरंदाज़ों की कमी विजयनगर सेना की प्रमुख कमज़ोरी थी। इसके अतिरिक्त, सेना का सामंती संगठन भी विजयनगर के पतन का प्रमुख कारण था।
- विजयनगर जैसे महान साम्राज्य के लिये यह आवश्यक था कि उसके शासकों में कुशल प्रशासक के साथ-साथ योग्य सेनापति के भी गुण हों। कृष्णदेव राय के पश्चात् उसके उत्तराधिकारियों में इस गुण का नितांत अभाव था, जिससे अधीनस्थ सामंतों की राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा बढ़ने लगी और यह राज्य के पतन में सहायक सिद्ध हुई।
- रामराय की अन्य राज्यों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने की नीति भी विजयनगर साम्राज्य के पतन में महत्त्वपूर्ण कारक सिद्ध हुई।

विजयनगर साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था (Administrative System of Vijayanagara Empire)

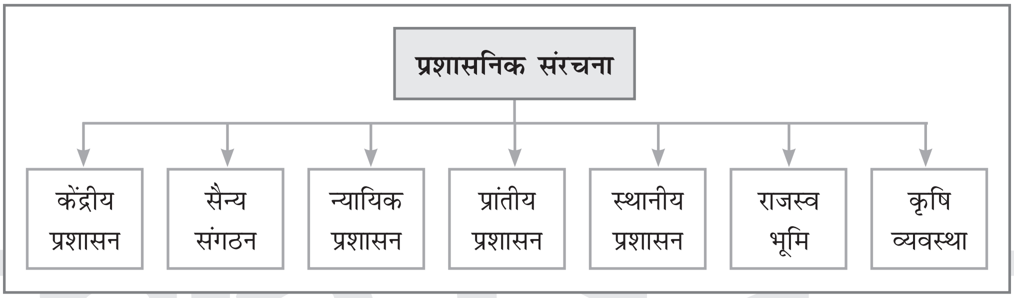

केंद्रीय प्रशासन

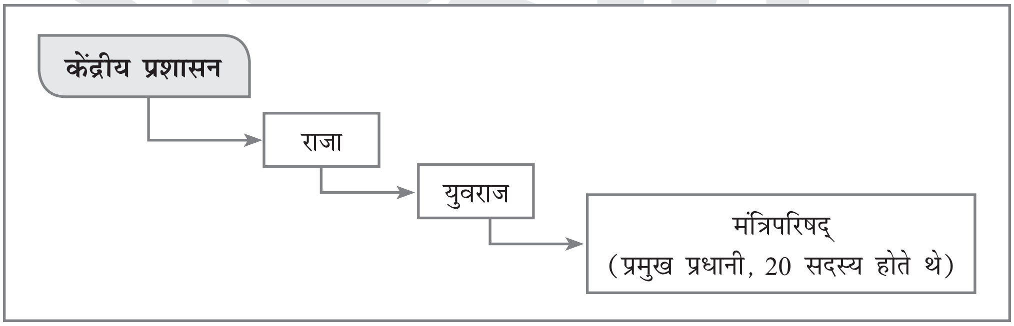

- विजयनगर साम्राज्य की शासन व्यवस्था राजतंत्रात्मक थी। राजा शासन का प्रमुख होता था और राज्य की संपूर्ण शक्ति उसी में निहित होती थी। उसे 'राय' कहा जाता था तथा उसमें देवत्व का अंश माना जाता था। वह धर्म के अनुसार शासन करता था। राजाओं को राज्याभिषेक के समय वैदिक राजाओं की भाँति प्रजापालन और निष्ठा की शपथ लेनी पड़ती थी। राज्य में प्रशासन, न्याय, नियुक्तियाँ, सुरक्षा, शांति व्यवस्था तथा प्रजा के मध्य सद्भाव संबंधी समस्त कार्य राजा द्वारा ही संपादित किये जाते थे।
- शासक के बाद युवराज का पद होता था। राजा अपने शासनकाल में ही इसकी घोषणा कर देता था। सामान्यत: राजा का ज्येष्ठ पुत्र ही युवराज होता था, किंतु पुत्र न होने पर राजपरिवार के किसी भी योग्यतम पुरुष को युवराज नियुक्त किया जाता था। युवराज की नियुक्ति के पश्चात् उसका अभिषेक किया जाता था, जिसे 'युवराज पट्टाभिषेकम्' कहा जाता था।

- महमूद गवाँ ने राजस्व संग्रह में सुधार करने का प्रयास किया। उसने भूमि की पैमाइश कराकर लगान का निर्धारण किया। किसान नकद या गल्ले के रूप में लगान दे सकते थे।

बहमनीकालीन समाज

- समाज दो भागों में विभक्त था– प्रथम, हिंदू जो कृषक, शिल्पकार आदि थे और द्वितीय, मुस्लिम जो सैनिक या राज्य के प्रशासनिक अधिकारी होते थे। अधिकारी वर्ग संपन्न वर्ग था और वे विलासिता का जीवन व्यतीत करते थे।
- 1468 ई. में रूसी व्यापारी निकितिन ने बहमनी राज्य की यात्रा की। उसके अनुसार, ग्रामीण लोगों का जीवन दयनीय था तथा अमीर और सरदार वर्ग के लोग अत्यंत धनी थे।

शिक्षा और साहित्य

- बहमनी सुल्तानों ने मुस्लिमों की शिक्षा के लिये नगरों में मदरसों का निर्माण कराने के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में मस्जिदों का निर्माण कराकर उनमें शिक्षा की व्यवस्था की।
- महमूद गवाँ द्वारा बीदर में बनवाए गए मदरसे में विदेशी विद्वानों की नियुक्ति की गई थी। इस मदरसे में अरबी और फारसी की शिक्षा दी जाती थी। इन विद्या केंद्रों को राज्य द्वारा अनुदान दिया जाता था।
- बहमनी सुल्तानों ने अपने राज्य में विद्वानों को संरक्षण प्रदान किया। सुल्तान अहमदशाह के शासनकाल में अरबी के सुप्रसिद्ध विद्वान मुहम्मद अलमख्जेमी गुजरात से आकर दक्कन में बसे थे।

बहमनीकालीन वास्तुकला

- बहमनीकालीन वास्तुकला में भारतीय शैली के साथ तुर्की तथा फारसी शैली का भी प्रभाव था। अलाउद्दीन बहमन शाह के मकबरे में फारसी शैली की गहरी नीली मीनाकारी पट्टी का प्रयोग हुआ है।
- बहमनी स्थापत्य कला में फारसी शैली का प्रारंभ गुलबर्गा की जामा मस्जिद से हुआ था। मस्जिद के चौकोर आधार और चौड़ी फैली मेहराबों में इस शैली का प्रयोग हुआ है।
- बहमनी शासकों के मकबरों में इंडो-इस्लामिक शैली का भी प्रभाव है। इन मकबरों में मीनाकारी सजावट और रंग-बिरंगे चित्रों के साथ खिड़कियों का भी प्रयोग हुआ है।
- बीदर के किले की सोलह खंभा मस्जिद भी बहमनी वास्तुकला का सुंदर उदाहरण है।

इकाई 10

भक्ति और सूफी आंदोलन
(Bhakti and Sufi Movement)

भक्ति आंदोलन
- पृष्ठभूमि
- भक्ति आंदोलन के उदय के कारण
  - राजनीतिक कारण
  - सामाजिक कारण
  - आर्थिक कारण
  - क्षेत्रीय भाषा की भूमिका
  - धार्मिक संप्रदायों में प्रतिस्पर्द्धा
  - भारत में इस्लाम का आगमन
- भक्ति आंदोलन की प्रमुख विशेषताएँ
- भक्ति आंदोलन का प्रसार
  - दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन
  - उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन
- भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत
  - शंकराचार्य
  - रामानुजाचार्य
  - निंबार्काचार्य
  - माधवाचार्य
  - रामानंद
  - कबीर
  - गुरुनानक
  - सूरदास
  - वल्लभाचार्य
  - चैतन्य
  - मीराबाई
  - तुलसीदास
  - रैदास
  - दादू
  - भक्ति आंदोलन के अन्य संत
- भक्ति आंदोलन का प्रभाव
  - राजनीतिक प्रभाव
  - सामाजिक व आर्थिक प्रभाव
  - सांस्कृतिक प्रभाव
  - साहित्य पर प्रभाव

सूफी आंदोलन
- परिचय
  - सूफी आंदोलन की विशेषता
  - सूफी दर्शन
  - सूफी आंदोलन के उदय के कारण
  - भारत में आगमन एवं प्रसार
  - सूफी और भक्ति आंदोलन में तुलना
  - भारत में लोकप्रियता का कारण
  - सूफी आंदोलन का प्रभाव

भक्ति आंदोलन

पृष्ठभूमि

- भक्ति शब्द की व्युत्पत्ति 'भज्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है 'सेवा करना' या 'भजना'। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भारत में भक्ति आंदोलन के उदय की रूपरेखा को इस्लाम में सूफीवाद के विकास से पूर्व की स्थिति के रूप में देखा जा सकता है। भक्ति आंदोलन की शुरुआत का कालानुक्रम दक्षिण भारत में सातवीं सदी से लेकर तेरहवीं सदी तक रखा जा सकता है, वहीं उत्तर भारत में इस आंदोलन का कालानुक्रम तेरहवीं सदी से लेकर सोलहवीं सदी तक माना जा सकता है। प्रारंभिक भक्ति आंदोलन तमिलनाडु के अलवार (विष्णु भक्ति में तन्मय) और नयनार (शिव भक्त) संतों के नेतृत्व में हुआ था। मध्यकालीन समाज के इस आंदोलन का उदय द्रविड़ देश में हुआ तथा इसका विस्तार उत्तर तक हुआ, जो कि भक्ति आंदोलन के रूप में प्रचलित हुआ।
- हिंदू धर्म में व्याप्त विसंगतियों को दूर करने के लिये मध्य काल में संतों, धार्मिक विचारकों एवं सुधारकों द्वारा भक्ति के माध्यम से समाज में जो सुधार लाए गए, उन सुधारों को भक्ति आंदोलन की संज्ञा प्रदान की जाती है। भक्ति आंदोलन में संतों के मतानुसार, समाज में सहिष्णुता की भावना का विकास, जाति व्यवस्था के बंधनों

इनका हिंदू संतों तथा मुस्लिम सूफियों दोनों से मेलजोल था। इन्होंने हिंदू और मुस्लिम धर्म में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिये 'कर्म की प्रधानता' एवं 'धर्म की मौलिकता' पर विशेष बल दिया। इन्होंने हिंदू एवं मुस्लिम संप्रदाय के पाखंडी धार्मिक नेताओं की कटु आलोचना की। संत कबीर ने धन-दौलत, जाति पर अभिमान, भूमि पर नियंत्रण आदि का घोर विरोध करते हुए जीवनयापन हेतु परिश्रम द्वारा धनोपार्जन पर बल दिया। इन्होंने भ्रमण एवं सत्संग के माध्यम से धर्म एवं समाज में व्याप्त अंधविश्वास, रूढ़िवादिता की कटु आलोचना करते हुए वेदों और कुरान की प्रमाणिकता को भी चुनौती दी। इन्होंने ईश्वर के एकत्व पर बल देते हुए मूर्ति पूजा, अवतारोपासना, ब्राह्मणों के कर्मकांड, तीर्थ-व्रत, गंगा स्नान, मंदिर-मस्जिद, नमाज़, अज़ान आदि पर व्यंग्य किया। इन्होंने ईश्वर को राम, हरि, अल्लाह, साँई, गोविंद आदि नामों से संबोधित किया।

संत कबीर के निम्न दोहे से धर्म के आडंबर पर किये गए इनके प्रहार को स्पष्ट देखा जा सकता है–

कांकर पाथर जोरि कै, मस्जिद लई चुनाय।
ता चढ़ि मुल्ला बांग दै, क्या बहरा हुआ खुदाय॥

कबीर निर्गुण भक्ति धारा के संत थे, जिन्होंने जनसाधारण की भाषा में भक्ति उपदेशों की सरलता एवं सुगमता पर बल दिया। ये संत होने के साथ-साथ अंत तक गृहस्थ भी बने रहे। इन्होंने समाज के लिये सुधारवादी कार्य, जैसे– सती प्रथा, बाल विवाह, पर्दा प्रथा, महिलाओं की समाज में दयनीय स्थिति आदि के विरुद्ध आवाज उठाने का कार्य किया। कबीर के दोहे उनके शिष्य धर्मदास द्वारा 'बीजक' में संकलित हैं। इनकी रचनाएँ 'गुरुग्रंथ साहिब' में संकलित हैं।

गुरु नानक

- **काल–** 1469-1538 ई.
- **जन्म स्थल–** तलवंडी (ननकाना साहब, वर्तमान पाकिस्तान में)
- **संप्रदाय–** सिख धर्म

मध्यकालीन समाज को अत्यधिक प्रभावित करने वाले संत, नव धर्म 'सिख धर्म' के संस्थापक के रूप में गुरु नानक (प्रथम गुरु) को जाना जाता है। इनके विचार कबीर से मिलते-जुलते थे तथा ये कबीर के समकालीन थे। इन्होंने संपूर्ण भारत का पाँच बार भ्रमण किया, जिसे 'उदासी' का नाम दिया जाता है। इन्होंने अपने उपदेशों को श्रीलंका तथा अन्य देशों में भी पहुँचाया। गुरु नानक ने धार्मिक आडंबरों, कर्मकांडों, मूर्ति पूजा, अवतारवाद, जाति बंधन आदि का विरोध किया। इन्होंने ईश्वर को निर्गुण एवं निराकार बताते हुए उसे राम, हरि, खुदा, अल्लाह आदि नामों से संबोधित किया। इन्होंने ईश्वर को 'अकाल पुरुष' के नाम से पुकारा। इन्होंने मोक्ष की प्राप्ति के लिये ईश्वर की आराधना करने का उपदेश दिया। इनके उपदेश की भाषा अत्यंत सरल एवं व्यावहारिक होती थी, जिसे आमजन सरलतापूर्वक समझ सकते थे। गुरु नानक के 'सिद्धांतों के सार' को हम इनके आत्मज्ञान की प्राप्ति के उपरांत दिये गए वक्तव्य 'ना कोई हिंदू ना कोई मुसलमान' से समझ सकते हैं। मुगल शासक अकबर की सामाजिक तथा धार्मिक नीतियों पर भी इनका प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

गुरु नानक ने महिलाओं के लिये मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करते हुए उन्हें मोक्ष प्राप्ति का अधिकार दिया तथा सती प्रथा का विरोध किया। इनके द्वारा आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिये चरित्र एवं आचरण की शुद्धता (प्रथम नियम के रूप में), गुरु की अनिवार्यता तथा गुरु परंपरा को प्रबलता प्रदान की गई। इन्होंने 'लंगर' प्रथा का प्रारंभ कर समाज में व्याप्त असमानताओं का अंत करने का प्रयास करते हुए सहभोज को प्रोत्साहित किया। इन्होंने भजन के माध्यम से ईश्वर का जाप करने का उपदेश दिया। इनके उपदेशों को 'गुरुग्रंथ साहिब' में (सिखों के पाँचवें गुरु अर्जुन देव द्वारा) संकलित किया गया।

इकाई 11

मुगल साम्राज्य
(Mughal Empire)

मुगल साम्राज्य

- महत्त्वपूर्ण स्रोत
- प्रमुख शासक
  - ➤ बाबर
  - ➤ हुमायूँ
  - ➤ हुमायूँ का निर्वासन
  - ➤ हुमायूँ द्वारा सत्ता की पुनः प्राप्ति
- शेरशाह सूरी
  - ➤ परिचय
  - ➤ आरंभिक जीवन
  - ➤ हुमायूँ से संघर्ष
  - ➤ शासक के रूप में
- शेरशाह के उत्तराधिकारी और सूर वंश का पतन
- शेरशाह सूरी की प्रशासनिक व्यवस्था
  - ➤ राजत्व सिद्धांत
  - ➤ केंद्रीय प्रशासन
  - ➤ प्रशासनिक विभाजन
- राजस्व व्यवस्था
  - ➤ भू-राजस्व व्यवस्था
  - ➤ मुद्रा व्यवस्था
  - ➤ व्यापार
- कल्याणकारी कार्य
  - ➤ सड़कों और सरायों का निर्माण
  - ➤ दान व्यवस्था
- शिक्षा एवं साहित्य
- स्थापत्य कला

अकबर

जहाँगीर (1605-1627 ई.)

शाहजहाँ (1627-58 ई.)

औरंगज़ेब (1658–1707 ई.)

महत्त्वपूर्ण स्रोत

मुगल वंश की जानकारी के संदर्भ में विभिन्न साहित्यिक स्रोत उपलब्ध हैं, जो निम्नलिखित हैं–

- **तुजुक-ए-बाबरी (बाबरनामा) :** यह बाबर की आत्मकथा है। बाबर ने इसकी रचना तुर्की भाषा में की है। बाद में फारसी भाषा में इसका अनुवाद अब्दुर्रहीम खानखाना और पायंदा खान ने किया। अंग्रेज़ी में इसके अनुवाद का श्रेय ए.एस. बेवरिज को दिया जाता है। इस ग्रंथ से आरंभिक मुगल इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है।
- **हुमायूँनामा :** यह हुमायूँ की जीवनी है तथा इसकी रचना हुमायूँ की बहन गुलबदन बेगम ने की है। यह ग्रंथ भी मुगल काल पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डालता है।
- **तबकात-ए-अकबरी :** इसकी रचना निज़ामुद्दीन अहमद ने की है। इससे अकबर के शासनकाल का विवरण प्राप्त होता है।
- **अकबरनामा :** अबुल फज़ल द्वारा रचित इस ग्रंथ से अकबर के शासनकाल की जानकारी प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त, अबुल फज़ल की एक अन्य रचना आइन-ए-अकबरी से भी मुगल वंश की जानकारी मिलती है।
- **इकबालनामा-ए-जहाँगीरी :** मोतमिद खाँ ने इसकी रचना की है। इससे बाबर, हुमायूँ, अकबर और जहाँगीर के इतिहास का वृत्तांत प्राप्त होता है।

- **पादशाहनामा :** शाहजहाँ के दरबारी कवि अब्दुल हमीद लाहौरी ने इसकी रचना की है। इससे शाहजहाँ के शासनकाल की जानकारी प्राप्त होती है।
- **आलमगीरनामा :** औरंगज़ेब के शासनकाल में मिर्ज़ा मुहम्मद काजिम ने इसकी रचना की।

प्रमुख शासक

बाबर

- बाबर का जन्म 1483 ई. में फरगाना में हुआ था। उसका पिता उमर शेख मिर्ज़ा, फरगाना का शासक और तैमूर वंश से संबंधित था तथा माता कुतलुग निगार खान मंगोल शासक और चंगज़ खाँ के वंशज यूनुस खान की पुत्री थी। इस तरह बाबर दो प्रमुख वंशों से संबंधित था। उसका कुटुंब तुर्कों की चगताई शाखा के अंतर्गत आता था, जिसे सामान्य रूप में मुगल कहा गया।
- पिता की मृत्यु के बाद 14 वर्ष की अवस्था में बाबर फरगाना का शासक बना। वह महत्त्वाकांक्षी था और समरकंद पर अधिकार करना चाहता था। इस क्रम में उसने दो बार समरकंद पर अपना आधिपत्य जमाया, परंतु यह सफलता अल्पकालिक थी। समरकंद और फरगाना को खोने के बाद उसने काबुल की ओर रुख किया और 1504 ई. में उसने काबुल को जीतकर वहाँ अपना शासन स्थापित किया। इसके पश्चात् उसने 'मिर्ज़ा' की जगह 'बादशाह' की उपाधि धारण की।
- अपने पूर्वजों के भारत आक्रमण का वृत्तांत सुनकर उसने भारत पर आक्रमण करने का निश्चय किया। उसने भारत पर पाँच बार आक्रमण किया, किंतु वह पंजाब के सीमावर्ती क्षेत्रों– भेरा, सियालकोट, जालंधर और सुल्तानपुर को ही जीत सका।
- लोदी वंश के शासक इब्राहिम लोदी से असंतुष्ट होकर अमीरों और सामंतों ने विद्रोह कर दिया। इसी बीच पंजाब के सामंत शासक दौलत खाँ के निमंत्रण पर बाबर ने भारत पर आक्रमण किया और 1526 ई. में पानीपत के युद्ध में इब्राहिम लोदी को पराजित कर मुगल वंश की स्थापना की।
- अफगानों ने मेवाड़ के शासक राणा सांगा के नेतृत्व में संगठित होना शुरू किया। राणा सांगा उत्तर भारत के शक्तिशाली राजपूत शासक थे। उनका मानना था कि अन्य विदेशी आक्रमणकारियों की भाँति बाबर भी लूटपाट करके वापस चला जाएगा, किंतु बाबर द्वारा भारत में रहने का निर्णय करने से उनकी आकांक्षाओं पर तुषारापात हो गया। इसके अतिरिक्त, मुगलों द्वारा कालपी और बयाना पर अधिकार कर लेने से भी वह असंतुष्ट हो गया। उन्होंने मुगलों से कालपी और बयाना की माँग की, किंतु इनकार करने पर दोनों पक्षों में युद्ध अवश्यंभावी हो गया।
- राणा सांगा की वीरता की गाथाओं को सुनकर जब मुगल सैनिक हतोत्साहित हो गए, तब बाबर ने जिहाद का नारा दिया और अपने सैन्य समूह के समक्ष उसने शराब की सुराहियों को तोड़ कभी शराब न पीने का प्रण लिया। इसके अतिरिक्त, उसने मुसलमान व्यापारियों पर से व्यापारिक कर (तमगा) समाप्त कर दिया। इससे सैनिकों में एक नए उत्साह का संचार हुआ और वे युद्ध के लिये तैयार हो गए।
- 1527 ई. में खानवा के मैदान में बाबर और राणा सांगा के मध्य हुए युद्ध में राणा सांगा की पराजय हुई तथा जीत के बाद बाबर ने 'गाज़ी' की उपाधि धारण की। इसके उपरांत पानीपत के युद्ध ने बाबर को दिल्ली और आगरा का शासक बना दिया तथा मुगल राज्य की स्थापना हुई, वहीं खानवा के युद्ध ने बाबर को स्थायित्व प्रदान किया। खानवा विजय के पश्चात् अलवर, चंदावर, रापुड़ी, इटावा पर भी मुगलों का अधिकार हो गया।
- अब बाबर ने चंदेरी की तरफ रुख किया। विदित है कि चंदेरी का शासक मेदिनी राय, खानवा के युद्ध में राणा सांगा की तरफ से लड़ा था और राजपूतों को पुनः संगठित कर रहा था। बाबर ने मेदिनी राय के पास संदेश भेजा

शासनकाल में शासन-सूत्र मंत्री हेमू के हाथों में केंद्रित था। गद्दी के अन्य दावेदारों ने विरोध किया तथा इसी क्रम में इब्राहिम सूरी ने दिल्ली तथा आगरा पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार निरंतर हो रहे विद्रोह और केंद्रीय सत्ता के कमज़ोर होने के क्रम में सिकंदर सूर, इस वंश का अंतिम शासक बना। उसके शासनकाल में भी सूर सत्ता एकीकृत नहीं हो सकी और इसका लाभ उठाकर हुमायूँ ने 1555 ई. में सरहिंद के युद्ध में सिकंदर सूर को पराजित कर भारत में मुगल सत्ता की पुनर्स्थापना की।

शेरशाह सूरी की प्रशासनिक व्यवस्था (Administrative System of Shershah Suri)

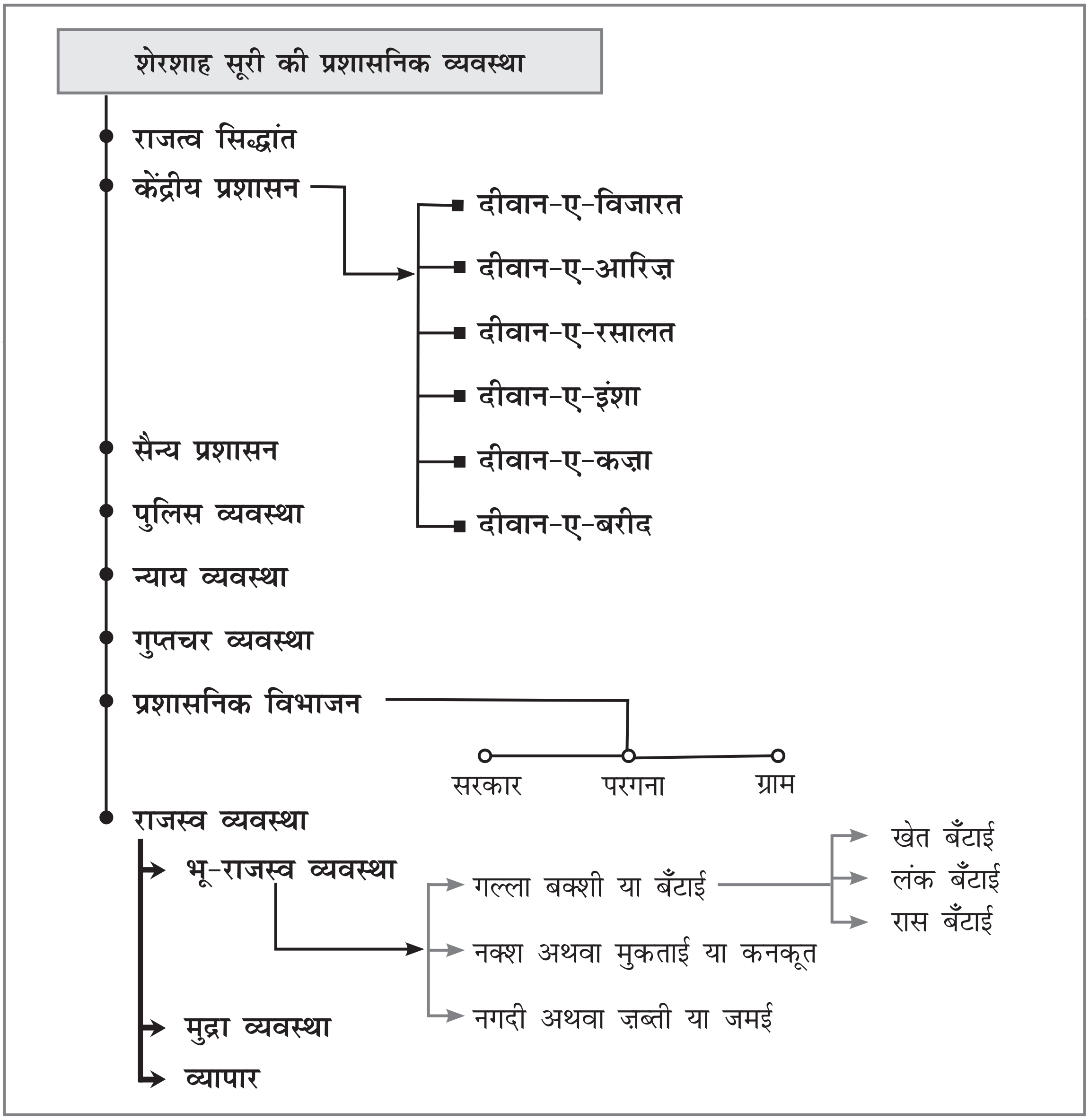

- हिंदी के प्रधान कवियों में तुलसीदास, सूरदास, रहीम व बीरबल थे। यद्यपि, तुलसीदास का संपर्क अकबर से कभी नहीं हुआ, तथापि उनकी गणना सर्वश्रेष्ठ कवियों में होती थी। सूरदास के पिता रामदास अकबर के दरबार में रहते थे। सूरदास आगरे के भक्त कवि के रूप में विख्यात थे।
- बीरबल को अकबर ने 'कविराय' की उपाधि से विभूषित किया था। नरहरी सहाय अकबर के दरबारी कवि थे तथा उन्हें 'महापात्र' की उपाधि मिली थी।

संगीत

- अकबर संगीत प्रेमी होने के साथ कलाकारों का संरक्षक भी था। उसके दरबार में कलाकारों का एक समूह रहता था, जिसे 'नवरत्न' कहा जाता था। वह स्वयं संगीत विद्या का ज्ञाता था।
- अकबर के नवरत्नों में तानसेन, बीरबल, टोडरमल, अबुल फज़ल, भगवानदास, मानसिंह, अब्दुर्रहीम खानखाना, मुल्ला दो प्याजा, हकीम हुमाम और फैज़ी थे।
- तानसेन अकबर के सर्वश्रेष्ठ संगीतज्ञ थे। अकबर ने उन्हें रीवा से अपने दरबार में बुलाया था।
- उस समय ध्रुपद गायन शैली प्रचलित थी, इसलिये तानसेन ने इस शैली में अकबर का गुणगान किया था। तानसेन को अकबर ने 'कंठाभरणवाणी' की उपाधि से विभूषित किया था। तानसेन के पुत्र तानतरंग खाँ भी अकबर के दरबार में रहते थे।
- तानसेन के अतिरिक्त, ध्रुपद गायक बैजू बावरा, बख्श, गोपाल, हरिदास, सूरदास आदि थे। इसके अतिरिक्त, सुभान खाँ, सुरजान खाँ, मियाँ चाँद, सरोद खाँ, मियाँ लाल, चाँद खाँ आदि भी अकबर के दरबार की शोभा बढ़ाते थे।
- अकबर के दरबार में दक्षिण मशहद और हेरात के गायकों तथा वार्षिकी संगीत के ग्रंथकारों को भी स्थान प्राप्त था। इनके ज्ञान के समन्वय व मिश्रण से नए-नए रागों का सृजन हुआ। तानसेन ने मियाँ की होढ़ी के रागों की रचना की। इसके अतिरिक्त, चरजू ने चरजू की मल्हार और सूरदास ने सूरदासी मल्हार की रचना की।

चित्रकला

- अकबर को चित्रकला से भी अनुराग था। उसके काल में चित्रकला की उन्नति हुई। उसका मानना था कि चित्रकारी मनुष्य को ईश्वर की तरफ झुकने के लिये बाध्य करती है। अकबर के दरबार में प्रमुख चित्रकार दशवंत, बसावन मुकंद, जगत, महेश आदि थे। उसने चित्रकारी हेतु एक अलग विभाग की स्थापना की तथा प्रसिद्ध चित्रकार ख्वाजा अब्दुस समद को इसका प्रमुख बनाया गया। उसे 'शीरीकलम' अथवा 'मधुर लेखनी' की उपाधि प्रदान की गई। उसे 400 का मनसब दिया गया था।
- दरबार के चित्रकार जितने चित्र बनाते, उन्हें प्रत्येक सप्ताह अकबर के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता था।
- चित्रकला विभाग में देश के विभिन्न भागों तथा विदेशों से भी चित्रकार बुलाए जाते थे। अकबर के कला प्रेम को 'आइन-ए-अकबरी' में उल्लेखित किया गया है।
- अकबर के दरबार में अब्दुस समद के अतिरिक्त अन्य प्रमुख चित्रकार मीर सैय्यद अली तथा फारुख बेग थे। इस समय अनेक ग्रंथों की भी चित्र-सज्जा की गई, जिनमें हम्ज़ानामा, चंगेज़नामा, ज़फरनामा, रज़्मनामा का रामायण प्रमुख हैं।
- अकबर के काल में पनपने वाली एक अन्य कला भित्ति चित्रकारी थी। फतेहपुर सीकरी के विभिन्न भवनों में यह कला देखने को मिलती है। पांडुलिपियों के किन्नरों को चित्रित करने की कला भी इसी समय विकसित हुई।
- दशवंत द्वारा तैयार पांडुलिपियाँ खानदाने तैमूरिया एवं रज़्मनामा क्रमशः खुदाबक्श लाइब्रेरी पटना तथा सवाई मानसिंह द्वितीय संग्रहालय, जयपुर में संरक्षित हैं। तूतीनामा पांडुलिपि क्वींसलैंड म्यूजियम ऑफ आर्ट में संरक्षित है।

- मंसूर प्राकृतिक दृश्यों और पशु-पक्षियों के चित्र बनाने में निपुण था। उसकी प्रसिद्ध कृति 'लाल फूलों की बहार' है।
- बिशनदास मानव या छवि चित्र बनाने में माहिर था। जहाँगीर ने उसे फारस के शाह, उसके अमीरों और परिजनों के चित्र बनाने के लिये उसके दरबार में भेजा था।
- दौलत नामक चित्रकार को जहाँगीर ने चित्रकारों के आकृति चित्रण का आदेश दिया था। दौलत ने बिशनदास, अबुल हसन, गोवर्धन आदि प्रमुख चित्रकारों के चित्र बनाए थे।
- जहाँगीर के समय चित्रकला में प्राकृतिक दृश्यों, त्योहार, शिकार, व्यक्तिचित्र आदि को दर्शाया जाने लगा था। उसके काल में चित्रकला की सूक्ष्मता में वृद्धि हुई। वस्तुतः उसका काल चित्रकला के चरमोत्कर्ष का काल था।

विविध

- जहाँगीर के शासनकाल में 'पित्रादूरा' शैली का प्रयोग किया गया। इस विधि में इमारत की दीवारों को नीम-कीमती रत्नों से बने फूलों की आकृतियों से सजाया जाता था। इस शैली का प्रयोग एतमादुद्दौला के मकबरे में किया गया था।
- जहाँगीर के शासनकाल में इमारतों में लाल बलुआ पत्थर की जगह संगमरमर का प्रयोग किया गया।
- नूरजहाँ को लाहौर के शालीमार बाग में दफनाया गया।

शाहजहाँ (1627-58 ई.)

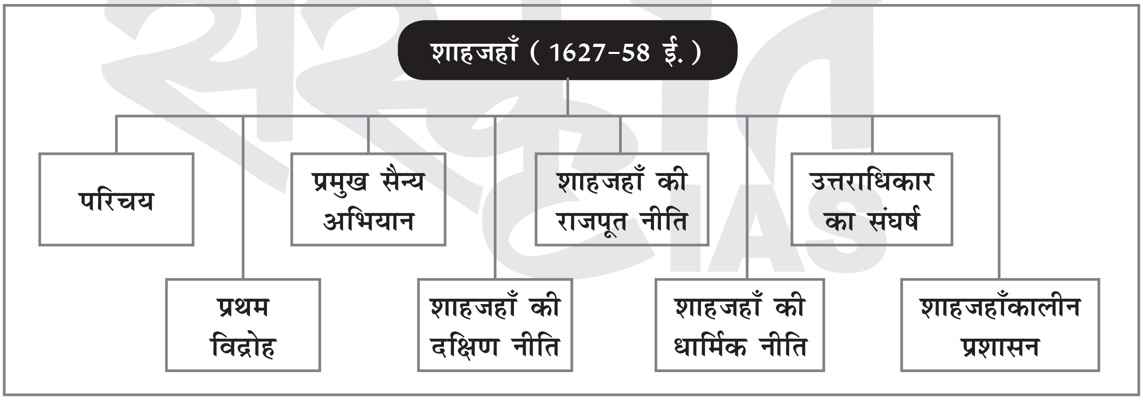

परिचय

- शाहजहाँ का जन्म 1592 ई. में लाहौर में हुआ। उसका मूल नाम खुर्रम था। उसके पिता का नाम जहाँगीर और माता का नाम जगतगोसाई (जोधाबाई) था। शहजादे के रूप में अहमदनगर पर विजय के पश्चात् जहाँगीर द्वारा उसे 'शाहजहाँ' की उपाधि दी गई। उत्तराधिकार युद्ध में शहरयार को पराजित करने के बाद आगरा में 1628 ई. में उसका राज्याभिषेक हुआ।
- शाहजहाँ का प्रथम शिक्षक मुल्ला कासिम बेग तबरीजी था। वह ईरानी मूल के अपने शिक्षक हकीम अली गिलानी से अधिक प्रभावित हुआ। उसे तीरंदाज़ी, घुड़सवारी तथा बंदूक चलाने की शिक्षा दी गई।
- 1612 ई. में शाहजहाँ का विवाह आसफ खाँ की पुत्री अर्जुमंद बानो बेगम से हुआ, जो आगे चलकर 'मुमताज महल' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

इकाई 12

मुगल प्रशासन
(Mughal Administration)

- परिचय
  - ➤ राजत्व सिद्धांत
- केंद्रीय प्रशासन
  - ➤ मंत्रिपरिषद्
  - ➤ प्रांतीय प्रशासन
  - ➤ मनसबदारी पद्धति
  - ➤ भू-राजस्व व्यवस्था
  - ➤ साहित्य एवं कला
  - ➤ चित्रकला
  - ➤ संगीत
  - ➤ उद्यान

परिचय

भारतीय इतिहास में मौर्य साम्राज्य के पश्चात् मुगलों ने विशाल साम्राज्य की स्थापना की। इस केंद्रीकृत प्रशासन की नींव का वास्तविक निर्माता अकबर था। अकबर ने पूर्ववर्ती तुर्क-अफगान शासन प्रणाली में मौलिक परिवर्तन किया, जो आगे चलकर एक केंद्रीकृत शासन के रूप में स्थापित हुआ। इस प्रक्रिया के अंतर्गत अकबर ने मंगोल और तैमूरी पद्धति के साथ-साथ शेरशाह द्वारा विकसित की गई शासन प्रणाली की मुख्य विशेषताओं को भी अपनाया। इस प्रकार, मुगल प्रशासन में पूर्व प्रचलित और नवीन तत्त्वों का समावेश दिखलाई पड़ता है। मुगल प्रशासन के बारे में आइन-ए-अकबरी, दस्तूरुल और अखबरात से महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है।

राजत्व सिद्धांत

- मुगलों का राजत्व सिद्धांत मंगोल, तुर्की और ईरानी परंपराओं का सम्मिश्रण था। इस मिश्रण पर भारतीय राजनीति का भी प्रभाव पड़ा और अंतिम रूप में जो स्वरूप उभरा, वह अबुल फज़ल के राजत्व के सिद्धांत में परिलक्षित होता है। वस्तुत: मुगलों के राजत्व सिद्धांत का विकास अकबर के समय हुआ तथा अबुल फज़ल ने इसका सैद्धांतिक आधार प्रस्तुत किया।
- अकबर को विरासत में जो विचार और परंपराएँ प्राप्त हुईं, वह उसके शासन में भी परिलक्षित होती हैं।
- वस्तुत: अकबर धार्मिक सहिष्णुता में विश्वास करता था। उसके अनुसार यदि हज़ारों गुणों से युक्त शासक सभी धर्मों और मनुष्यों का समान रूप से आदर नहीं करता है तथा वह प्रजा के कल्याण की अनदेखी करता है, तो वह शासक जैसे महान पद के सर्वथा अयोग्य है।
- अबुल फज़ल के अनुसार, मुगल बादशाह का राजत्व सिद्धांत एकतंत्रीय और स्वेच्छाचारी था। बादशाह, शासन के सभी तंत्रों का मुखिया होता था तथा वह राज्याध्यक्ष एवं धर्माध्यक्ष था। उसकी शक्ति असीम थी और उस पर किसी का नियंत्रण नहीं था।
- चूँकि, बादशाह को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था, इसलिये वह एकाकी अधिकारों के अतिरिक्त विशेषाधिकार का भी हकदार होता था। अबुल फज़ल राजत्व सिद्धांत का यथार्थवादी स्वरूप प्रस्तुत करते हुए कहता है कि बादशाह अपनी अविभाज्य शक्ति का उपयोग करते हुए अपने अधीनस्थ क्षेत्रों में एक नियम, एक नियामक, एक लक्ष्य और एक विचार के अनुरूप अपनी प्रभुसत्ता प्रतिस्थापित करता है।

- **कानूनगो :** इसका मुख्य कार्य फसलों और लोगों का पूरा विवरण रखना होता था। अमील के साथ कानूनगो ही मुख्यत: सर्वेक्षण मूल्यांकन एवं राजस्व वसूली के कार्य से जुड़ा हुआ था।

ग्राम

परगने के अंतर्गत अनेक गाँव होते थे, जो प्रशासन की सबसे छोटी इकाई होते थे। मुगल शासन में एक स्वायत्त संस्था के रूप में स्थानीय प्रशासन एवं संस्था को संरक्षण प्राप्त था।

- **ग्राम प्रधान :** इसे खूत, मुकद्दम या चौधरी भी कहा जाता था। ग्राम अधिकारियों में ग्राम प्रधान का पद सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता था, जो गाँव और शासन के बीच सेतु का कार्य करता था। गाँव के लोग बादशाह तक अपनी फरियाद इसी के माध्यम से पहुँचाते थे। सभी पर निगरानी रखना, राजस्व एकत्र करना, पुलिस की ज़िम्मेदारी निभाना तथा विवादों को निपटाना इसके प्रमुख कार्य थे।
- **पटवारी :** यह ग्राम प्रधान के बाद दूसरा सबसे महत्त्वपूर्ण कर्मचारी होता था, जिसे लेखापाल की भाँति खेती एवं किसानों की जोतों का तथा बोई गई फसलों का हिसाब रखना होता था। अकबर के समय इसे राजस्व का एक प्रतिशत कमीशन के तौर पर दिया जाता था। चूँकि, किसान स्वयं अपनी भूमि का रिकॉर्ड नहीं रखते थे, इसलिये कहीं-कहीं पटवारी किसानों को परेशान भी करते थे। ब्रिटिश काल में पटवारी, सरकारी कर्मचारी होने लगा था।

मनसबदारी पद्धति

- "मनसब" का शाब्दिक अर्थ पद या ओहदा होता है। मुगल काल में जिस व्यक्ति को सम्राट मनसब प्रदान करता था, उस व्यक्ति को 'मनसबदार (Mansabdar)' कहा जाता था।
- मनसबदारी पद्धति, मुगल प्रशासन का सबसे अहम हिस्सा होती थी। यह व्यवस्था दशमलव प्रणाली पर आधारित थी। इस पद्धति का आरंभ अकबर ने किया था। इसके माध्यम से अकबर ने अमीर वर्ग, सिविल अधिकारी और सैन्य अधिकारी को एक कड़ी में जोड़ने का प्रयास किया।
- अकबर ने अपने शासन के दौरान प्रत्येक सैनिक और असैनिक अधिकारी को उसकी योग्यता के आधार पर कोई-न-कोई मनसब (पद) अवश्य प्रदान किया। इन पदों को उसने जात व सवार नामक दो भागों में विभाजित किया।

जात और सवार

- जात का अर्थ है व्यक्तिगत पद या ओहदा और सवार का अर्थ घुड़सवारों की उस निश्चित संख्या से है, जिसे किसी मनसबदार को अपने अधीन रखने का अधिकार होता था। अगर कोई व्यक्ति 500 का मनसब प्राप्त करता था, तो उसे 500 सैनिक रखने पड़ते थे और उसे इस सेना के रखरखाव के लिये भत्ता प्रदान किया जाता था। साथ ही उन्हें व्यक्तिगत वेतन भी दिया जाता था और अपने पद के अनुरूप उन्हें कुछ विशेष ज़िम्मेदारियाँ भी निभानी होती थीं।
- जात के आधार पर मनसबदार का व्यक्तिगत वेतन (तलब-खास) पदानुक्रम में उसकी हैसियत और स्थान से निर्धारित होता था, जबकि सवार से मनसबदार द्वारा रखे जाने वाले घुड़सवारों की संख्या तय होती थी।

मनसबदारों का वर्गीकरण

- मनसबदारों को 1595-96 ई. के आसपास तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था-
  - जिनके घुड़सवारों (सवार) की संख्या जात के बराबर होती थी, वह प्रथम श्रेणी के मनसबदार माने जाते थे।
  - जिनके पास जात की संख्या के आधे या आधे से अधिक घुड़सवार होते थे, वे द्वितीय श्रेणी के मनसबदार कहे जाते थे।

वर्णन किया है। भीमसेन कायस्थ ने नुस्खा-ए-दिलकुशा की रचना की। इसमें उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक व दक्कनियों के रीति-रिवाज़ों का विवरण दिया है।

- औरंगज़ेब के काल में संस्कृत के विद्वान रघुनाथ ने 'मुहूर्तमाला' तथा चतुर्भुज ने 'रसकल्पकम्' की रचना की।

मुगलकालीन साहित्य और लेखक			
क्रम	साहित्य	भाषा	लेखक
1.	तुजुक-ए-बाबरी	तुर्की	बाबर
2.	हुमायूँनामा	फारसी	गुलबदन
3.	तारीख-ए-रशीदी	फारसी	मिर्ज़ा हैदर दोलगत
4.	तज़किरात-उल-वाकयात	फारसी	जौहर अकतावची
5.	वाकयात-ए-मुश्ताकी	फारसी	रिजकुल्लाह मुश्ताकी
6.	तोहफा-ए-अकबरशाही	फारसी	अब्बास खाँ शरवानी
7.	अकबरनामा	फारसी	अबुल फज़ल
8.	मुत्तखब-उल-तारीख	फारसी	बदायूँनी
9.	इकबालनामा-ए-जहाँगीरी	फारसी	मोदमिद खाँ
10.	पादशाहनामा	फारसी	मुहम्मद अमीन कजबीनी
11.	बादशाहनामा	फारसी	अब्दुल हमीद लाहौरी
12.	वाक्यात-ए-आलमगिरी	फारसी	आकिल खाँ
13.	नासिर-ए-आलमगिरी	फारसी	साकी मुस्ताइद खाँ
14.	नुस्खा-ए-दिलकुशा	फारसी	भीमसेन
15.	मज्म-उल-बहरीन	फारसी	दारा शिकोह
16.	मुंत्तखब-उल-लुबाव	फारसी	खाफी खाँ

स्थापत्य

- मुगलों ने स्थापत्य कला के क्षेत्र में भी अत्यधिक विकास किया। मुगलों ने भव्य महलों, किलों, द्वारों आदि का निर्माण कर अपनी स्थापत्य उत्कृष्टता को प्रदर्शित किया। वस्तुतः मुगल स्थापत्य का इतिहास बाबर से प्रारंभ होकर अकबर और जहाँगीर के शासनकाल होते हुए शाहजहाँ के काल में अपने चरम पर पहुँचता है।
- बाबर के अल्प और अव्यवस्थित शासनकाल की वजह से उसका स्थापत्य कला के क्षेत्र में कम योगदान है। वह भारतीय कलाकारों से प्रभावित था और उसने भारतीय कलाकारों के साथ मिलकर काम करने के लिये अलबानिया के प्रसिद्ध स्थापत्य कलाकार सिनान के शिष्यों को आमंत्रित किया था।
- बाबर द्वारा बनाई गई इमारतों में पानीपत की काबुली मस्जिद तथा संभल की जामा मस्जिद प्रमुख हैं। पानीपत की काबुली मस्जिद का निर्माण ईंटों से किया गया है।

इकाई 13

मराठा साम्राज्य (Maratha Empire)

मराठा साम्राज्य
- पृष्ठभूमि
- प्रमुख स्रोत
- मराठा साम्राज्य के उदय के कारण

छत्रपति शिवाजी (1627-1680 ई.)
- परिचय
- शिवाजी का विजय अभियान
- शिवाजी का राज्याभिषेक (1674 ई.)
- मराठा प्रशासन
- मराठा साम्राज्य के उत्तराधिकारी

पृष्ठभूमि

- मराठा साम्राज्य का उदय मध्यकालीन भारतीय इतिहास की सर्वाधिक प्रमुख घटनाओं में से एक है। मराठा शब्द की उत्पत्ति राठा (Ratthas) शब्द से हुई है। एक त्रिभुजाकार पठार और चारों ओर पहाड़ियों से घिरा हुआ महाराष्ट्र प्रदेश पहाड़ों, वनों इत्यादि के कारण अत्यंत दुर्गम क्षेत्र है, इन भौगोलिक परिस्थितियों ने ही मराठों को वीर, परिश्रमी, सुदृढ़ और शक्तिशाली बना दिया। फलतः उनका एक राजनीतिक शक्ति के रूप में उदय एवं प्रसार हुआ। मराठों की मुख्य भाषा 'मराठी' थी, जिसने उनकी शक्ति को एक सूत्र में बाँधने का कार्य किया।
- पतनशील मुगल साम्राज्य के दौरान उत्पन्न राजनीतिक रिक्तता ने मराठों के उदय का मार्ग प्रशस्त किया। देश में स्वतंत्र राज्यों की स्थापना का जो क्रम आरंभ हुआ, उनमें सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य के रूप में मराठा साम्राज्य का उद्भव हुआ। मुगलों को सबसे कड़ी चुनौती मराठों द्वारा ही मिली।
- मराठों के वीर, साहसी एवं आक्रामक व्यक्तित्व के कारण ही उनकी शक्ति का अत्यधिक प्रसार हुआ। सत्रहवीं सदी के आते-आते शाहजी भोसले एवं शिवाजी ने मराठा राज्य को संगठित स्वरूप प्रदान किया।

प्रमुख स्रोत

मराठा इतिहास के विषय में मुख्य रूप से भीमसेन की पुस्तक 'नुस्खा-ए-दिलकुशा' से मुगल-मराठा संबंध (विशेष तौर पर दक्कन की राजनीति) के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त, रामदास कृत दासबोध एवं आनंदभुवन, जयराम पिंडे कृत राधामाधव विलास, रामचंद्र पंत अमात्य कृत 'संभाजी का अदनापात्र' तथा सभासद कृत शिवाजी की जीवनी इत्यादि भी मराठा इतिहास की जानकारी के प्रमुख स्रोत हैं।

मराठा साम्राज्य के उदय के कारण

मराठों के उद्भव एवं विकास हेतु महाराष्ट्र की भौगोलिक परिस्थितियाँ, तत्कालीन महाराष्ट्र का धार्मिक आंदोलन, मुगलों की कमज़ोर होती स्थिति, औरंगज़ेब की हिंदू विरोधी नीतियाँ, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शिवाजी का व्यक्तित्व इत्यादि प्रमुख कारक थे, जिनका विस्तृत वर्णन निम्नलिखित है-

- शिवाजी के राज्याभिषेक के उपरांत उन्होंने 'क्षत्रिय कुलावतंस' की उपाधि ली तथा अन्य मराठा सरदारों पर उनकी स्वाधीनता स्वीकार करते हुए 'मीरास पट्टी' नामक कर लगाया।
- 12 दिनों के उपरांत शिवाजी की माता जीजाबाई का देहांत हो गया। अतएव शिवाजी ने पुनः अक्तूबर 1674 में गोसाई नामक तांत्रिक से विधि-विधान के अनुसार राज्याभिषेक करवाया। राज्याभिषेक के उपरांत 1677 ई. में शिवाजी का अंतिम सैन्य अभियान कर्नाटक का था। इस क्रम में, शिवाजी ने जिंजी तथा बेल्लोर पर अपना अधिकार कर लिया। अंततः अप्रैल 1680 ई. में बीमारी के कारण शिवाजी की मृत्यु हो गई।

मराठा प्रशासन

शिवाजी एक शक्तिशाली और संपूर्ण प्रभुत्वसंपन्न शासक थे। राज्य की संपूर्ण शक्तियाँ उनके हाथों में केंद्रित थीं, बल्कि यह कहा जा सकता है कि वह कानून निर्माता, प्रशासकीय प्रधान, न्यायाधीश और सेनापति आदि सभी शक्तियों से संपन्न राज्य के सर्वोच्च व्यक्ति थे। शिवाजी ने अपनी प्रजा के सभी वर्गों के लिये एकसमान भाव रखा, उन्होंने मराठी भाषा को अपनी राजकीय भाषा बनाया तथा उसके विकास के लिये 'रघुनाथ पंडित हनुमंते' की अध्यक्षता में विद्वानों की एक समिति का गठन किया। इन विद्वानों से उन्होंने राज्य-व्यवहार-कोष नामक शब्दकोष लिखवाया। इतिहासकार रानाडे के शब्दों में, "शिवाजी नेपोलियन के समान एक महान संगठनकर्ता और असैनिक प्रशासन के निर्माणकर्ता थे।"

- शिवाजी का प्रशासन मूलतः दक्षिणी व्यवस्था पर आधारित था, परंतु इसमें कुछ मुगल तत्त्व भी शामिल थे। मराठा राज्य के अंतर्गत दो प्रकार के क्षेत्र होते थे–
  - **स्वराज:** जो क्षेत्र प्रत्यक्षतः मराठों के नियंत्रण में थे, उन्हें स्वराज क्षेत्र कहा जाता था।
  - **मुघलई (मुल्क-ए-कदीम):** यह वह क्षेत्र था, जिसमें वे चौथ एवं सरदेशमुखी वसूल करते थे।

स्वराज क्षेत्र तीन भागों में विभाजित थे :

- **पूना से लेकर साल्हेर तक का क्षेत्र :** इसमें उत्तरी कोंकण भी सम्मिलित था तथा यह पेशवा मोरोपंत पिंगले के अधीन था।
- **उत्तरी किनारा तथा दक्षिणी कोंकण का क्षेत्र :** यह क्षेत्र अन्नाजी दत्तो के अधीन था।
- दक्षिण देश के ज़िले, जिनमें सतारा से धारवाड़ एवं कोयल तक के क्षेत्र सम्मिलित थे, दत्तोजी पंत के नियंत्रण में थे।
- इनके अतिरिक्त, हाल में जीते गए जिंजी, वेल्लोर और अन्य अधिग्रहित क्षेत्र सेना के अंतर्गत थे। संपूर्ण साम्राज्य, प्रांत या तरफों में और तरफ, परगनों में, परगना **गाँव या मौजा** में विभक्त था।

केंद्रीय प्रशासन

- केंद्र में आठ मंत्रियों की परिषद् थी, जिसे 'अष्टप्रधान' कहते थे। इसे किसी भी अर्थ में मंत्रिमंडल नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इसमें सामूहिक उत्तरदायित्व नहीं था। वास्तविक रूप से शिवाजी स्वयं प्रधानमंत्री थे और अष्टप्रधान के मंत्रियों की स्थिति सचिवों की तरह थी। अष्टप्रधान में निम्नलिखित मंत्री शामिल थे–
  - **पेशवा :** पेशवा, मुख्यमंत्री होता था और संपूर्ण प्रशासन का पर्यवेक्षण और निरीक्षण करता था।
  - **अमात्य या मजूमदार :** यह वित्त मंत्री होता था और वित्त विभाग इसी के अंतर्गत आता था।
  - **मंत्री या वाकयानवीस :** यह दरबारी कार्यों का रिकॉर्ड रखता था।

इकाई 14

विविध पहलू
(Various Aspects)

उत्तरवर्ती मुगल शासक
- परिचय
- बहादुरशाह/शाहआलम प्रथम (1707-12 ई.)
- जहाँदारशाह (1712-13 ई.)
- फर्रुखशियर (1713-19 ई.)
- रफी-उद्-दरजात (24 फरवरी – 4 जून 1719 ई.)
- रफी-उद्-दौला या शाहजहाँ द्वितीय (6 जून – 17 सितंबर 1719 ई.)
- मुहम्मदशाह/रौशन अख्तर (1719–48 ई.)
- अहमदशाह (1748–54 ई.)
- आलमगीर द्वितीय (1754–58 ई.)
- शाहजहाँ तृतीय (1758–59 ई.)
- शाहआलम द्वितीय (1759–1806 ई.)
- अकबर द्वितीय (1806–37 ई.)
- बहादुरशाह द्वितीय/ज़फर (1837–57 ई.)

सिख गुरुओं से संबंधित मुख्य बिंदु
- सिख गुरुओं का संक्षिप्त परिचय

उत्तरवर्ती मुगल शासक

परिचय

- मुगलों के इतिहास को हम दो भागों में बाँट कर पढ़ते हैं– पूर्व मुगल और उत्तर मुगल।
  - पूर्व मुगल शासकों में बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगज़ेब का नाम आता है। ये वे शासक थे, जिन्होंने मुगल साम्राज्य को समृद्ध बनाने और विस्तार करने के अथक प्रयास किये और सफल भी रहे। औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद के मुगल उत्तराधिकारियों में उतनी योग्यता नहीं थी कि वे इस विशाल साम्राज्य को व्यवस्थित कर सकें।
  - उत्तर मुगल शासकों में बहादुरशाह, जहाँदारशाह, फर्रुखशियर, रफी-उद्-दरजात, रफी-उद्-दौला, मुहम्मदशाह, अहमदशाह, आलमगीर द्वितीय, शाहजहाँ तृतीय, शाहआलम द्वितीय, अकबर द्वितीय, बहादुरशाह ज़फर का नाम आता है।
- 1707 ई. में अहमदनगर में औरंगज़ेब की मृत्यु के बाद एक बार फिर शहजादों (मुअज्जम, आज़म, कामबख्श) में उत्तराधिकार को लेकर युद्ध छिड़ गया।
- औरंगज़ेब को स्वयं उत्तराधिकार के लिये युद्ध लड़ना पड़ा था, इसलिये वह मरने से पहले वसीयत कर गया था ताकि उसके पुत्रों में उत्तराधिकार का युद्ध न हो।
- मुअज्जम ने 18 जून, 1707 ई. को जजाऊ के युद्ध में आजम को पराजित कर मार डाला। इसी क्रम में, उसने जनवरी 1709 ई. में बीजापुर के युद्ध में कामबख्श को पराजित किया। इस युद्ध में कामबख्श घायल हो गया और अगले दिन उसकी मृत्यु हो गई।

शिक्षा भी दी। इनके उपदेशों से लोगों में विद्रोही प्रवृत्ति विकसित होने लगी। इस कारण जहाँगीर ने इन्हें ग्वालियर के किले में बंदी बना लिया। बाज प्रकरण के कारण शाहजहाँ से भी इनका संघर्ष हुआ।

- **गुरु हरराय (1645–1661 ई.)–** सिखों के सातवें गुरु थे। इन्होंने दारा के सामूगढ़ युद्ध में पराजित होकर पंजाब भागने पर उसकी मदद की। औरंगज़ेब द्वारा दरबार में बुलाने पर अपने पुत्र रामराय को दरबार में भेजा। इन्होंने अपने दूसरे पुत्र हरिकिशन को गद्दी सौंपी।
- **गुरु हरिकिशन (1661–1664 ई.)–** गुरु हरकिशन बाला पीर के नाम से भी जाने जाते हैं। इनका गुरु की गद्दी के लिये बड़े भाई रामराय से विवाद हुआ। रामराय की सिफारिश पर औरंगज़ेब ने इनको दिल्ली आमंत्रित किया किंतु इनकी लोकप्रियता के कारण वह भी कुछ नहीं कर सका।
- दिल्ली में जिस आवास में वह रुके थे वहाँ वर्तमान में प्रसिद्ध बंगला साहिब गुरुद्वारा है।
- **गुरु तेगबहादुर (1664–1675 ई.)–** हरिकिशन ने मृत्यु से पहले उन्हें 'बाकला दे बाबा' कहा तत्पश्चात् वे बाकला में गुरु स्वीकृत हो गए। धीनामल और रायमल इनके प्रमुख विरोधी थे।
- औरंगज़ेब की धार्मिक नीतियों का विरोध तथा इस्लाम धर्म स्वीकार न करने के कारण 1675 ई. में गुरु तेगबहादुर की हत्या कर दी गई।
- **गुरु गोविंद सिंह (1675–1708 ई.)–** इनका जन्म पटना में हुआ था, ये सिखों के दसवें तथा अंतिम गुरु माने जाते हैं। पंजाब की तराई मखोवल अथवा आनंदपुर में इन्होंने अपना मुख्यालय बनाया। गुरु गोविंद सिंह ने पाहुल प्रथा प्रारंभ की, इस मत में दीक्षित समूह को 'खालसा' कहा गया तथा नाम के अंत में 'सिंह' की उपाधि दी गई।
- इन्होंने खालसा का गठन 1699 ई. में किया तथा प्रत्येक सिख को पंचमकार (केश, कंघा, कड़ा, कच्छ और कृपाण) धारण करने का आदेश दिया। अपनी मृत्यु से पहले इन्होंने गद्दी को समाप्त कर एक पूरक ग्रंथ (दसवें बादशाह का ग्रंथ) का संकलन किया।

❑❑❑